CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुरातत्व - परिचय

3686

3686
24/8/60
State Museum, Library

069
श प.

भारतीय संग्रहालय
कलकत्ता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुरातत्व - परिचय

सी० शिवराममूर्ति

3606
24/8/68
State Museum, Library

भारतीय सग्रहालय
कलकत्ता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हिन्दी संस्करण
मई, १९६४

०६१
अ प

मूल अंग्रेज़ी से अनूदित
—अमल सरकार

ट्रस्टी बोर्ड, भारतीय संग्रहालय द्वारा प्रकाशित एवं
बिनानी प्रिण्टर्स प्राइवेट लि०, कलकत्ता-१ द्वारा मुद्रित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रस्तावना

पूर्वी-दिशा में भारतीय संग्रहालय का पुरातत्व-संबंधी संग्रह सबसे मूल्यवान है। बहुत दिनों से पुरातत्व-विभाग की एक सचित्र संक्षिप्त मार्ग-दर्शिका की मांग संग्रहालय के दर्शकों के लिए महसूस की जा रही थी। अधुना ट्रस्टी ने विभिन्न विभागों की मार्ग-दर्शिकाएँ, पिक्चर-पोष्टकार्ड एवं लेखों की तैयारी का भार अपनाया है। शैक्षणिक कार्यों की इस नियंत्रित योजना में वर्तमान मार्ग-दर्शिका का प्रकाशन हुआ है।

जो विराट संग्रह इस विभाग में प्रदर्शित है, यह मार्ग-दर्शिका उसकी कोई विस्तृत या पूर्ण सूची नहीं है; परन्तु सबसे महत्वपूर्ण वस्तुओं को दिखाते हुए पुरातत्व-संग्रह का एक साधारण ज्ञान इस छोटी-सी पुस्तक से प्राप्त होता है। जिन्हें विस्तृत अध्ययन करने की चाह हो वे ग्रंथ-सूची में उल्लिखित पुस्तकों तथा सूची से लाभ उठा सकते हैं।

नागरी व बंगला लिपियों का विकास-क्रम दिखाते हुए दो कोष्ठकों में से दर्शकों को मूर्तिकला तथा लिपि-विकास से परिचय हो जाता है। भौगोलिक दृष्टिकोण से वस्तुओं के अध्ययन के लिए प्रागैतिहासिक व आदि-ऐतिहासिक स्थानों तथा भारत के ऐतिहासिक कीर्तिस्तम्भों को दिखाते हुए एक मानचित्र भी दिया गया है।

आशा है कि यह मार्ग-दर्शिका व पिक्चर-पोष्टकार्ड दर्शकों की बहुत दिनों की माँग पूरी कर सकेंगी।

संग्रहालय के पुरातत्व-विभाग के पंडित अध्यक्ष श्री शिवराममूर्ति यह छोटी-सी मार्ग-दर्शिका प्रस्तुत करने में समर्थ हुए हैं जो संक्षिप्त होते हुए भी बुद्धिमान दर्शकों को प्रकोष्ठों से सम्यक परिचय करा देती है।

बहुत-से चित्र इस पुस्तिका में सन्निहित हैं; परन्तु कम मूल्य में इसे पाठकों के सामने उपस्थित किया जा रहा है।

रमा प्रसाद मुखर्जी
सभापति
बोर्ड ऑफ ट्रस्टीस
भारतीय संग्रहालय

२४ दिसम्बर, १९५३.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूची-पत्र

ऑनरेबल मि० जस्टिस रमा प्रसाद मुखर्जी द्वारा प्रस्तावना

चित्रों की-सूची vii—ix

प्रवेश कक्ष

पूर्वी युगीय मूर्तिकला--मौर्य व शुंग १

भारहुत कक्ष

पूर्वीयुगीय मूर्तिकला--शुंग, सातवाहन, कलिंग ३

गांधार कक्ष ९

गुप्त व मध्ययुगीन प्रकोष्ठ

पूर्वकालीन मूर्तिकला--मथुरा से कुशान ११

अमरावती से सातवाहन मूर्तिकला १२

गुप्त मूर्तिकला १४

मध्ययुगीन मूर्तिकला--उत्तर-प्रदेश,

विहार, बंगाल, उड़ीसा, मध्य-भारत, दक्षिण-भारत

तथा दाक्षिणात्य, जावा, कम्बोडिया १६

दक्षिणी बरामदा

विहार व उड़ीसा से मध्ययुगीन मूर्तिकला २२

पूर्वी व पश्चिमी बरामदे

स्थापत्य के कुछ टुकड़े २२

दूसरी मंज़िल के बरामदे

भारतीय मूर्तिकला व लिपि का विकास-क्रम दिखाते हुए प्रकोष्ठ २२

मुसलमानी कक्ष ३३

प्राग्-ऐतिहासिक व विविधि वस्तुओं का कक्ष ३६

ग्रंथ-सूची ४२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्रों की सूची

चि० १ (क) रामपुरवा का सिंहवाला स्तम्भ-शीर्ष; मौर्य, ई० पू० ३री शती—प्रवेश कक्ष

(ख) पटने का यक्ष; मौर्य, ई० पू० ३री शती—प्रवेश कक्ष

(ग) बेसनगर की यक्षी; शुंग, ई० पू० २री शती—प्रवेश कक्ष

(घ) भारहुत तोरण की सिरिमा देवता; ई० पू० २री शती—भारहुत कक्ष

चि० २ (क) अमरावती के मुदेड़े से मायादेवी का स्वप्न; सातवाहन, २री शती—गुप्त कक्ष

(ख) भारहुत तोरण का द्वारपथ; शुंग, ई० पू० २री शती—भारहुत कक्ष

चि० ३ (क) बोधिसत्व; गांधार, १ली शती—गांधार कक्ष

(ख) द्वारपाल; भुमरा, गुप्त, ५वीं सदी—गुप्त कक्ष

(ग) प्रभामंडल के साथ बुद्ध; मथुरा, गुप्त, ५वीं सदी—गुप्त कक्ष

(घ) तोते को लिये हुए यक्षी; मथुरा, कुशान, २री शती—गुप्त कक्ष

चि० ४ (क) माता व शिशु; बंगाल, मध्ययुग, ११वीं सदी—मध्ययुगीन कक्ष

(ख) रति व प्रीति के साथ मन्मथ; बिहार, मध्ययुग, १०वीं सदी—मध्ययुगीन कक्ष

(ग) हरगौरी; उत्तर-प्रदेश, मध्ययुग, १०वीं सदी—मध्ययुगीन कक्ष

चि० ५ (क) नायिका का प्रेम-पत्र लिखना, जो कि उसके शरीर पर नख-क्षत से मालूम किया जा सकता है; भुवनेश्वर,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उड़ीसा या विन्ध्य प्रदेश, मध्ययुग, १० से ११वीं सदी--मध्ययुगीन कक्ष

(ख) सर्वमंगला; सतना, रेवा स्टेट, मध्ययुग, ९वीं सदी--मध्ययुगीन कक्ष

(ग) नागिनी; खिंचिग, उड़ीसा, मध्ययुग, १०वीं सदी--मध्ययुगीन कक्ष

चि० ६ (क) सोमस्कन्द; दक्षिण भारत मध्ययुग, १०वीं सदी--प्रागैतिहासिक कक्ष

(ख) आलिंगन चन्द्रशेखर मूर्त्ति; दक्षिण भारत, मध्ययुग, १२वीं सदी--प्रागैतिहासिक कक्ष

(ग) शक्तियों के साथ विष्णु; रंगपुर, बंगाल, मध्ययुग, ११वीं सदी--मध्ययुगीन कक्ष

चि० ७ (क) सरस्वती; हेलविड, मैसूर, मध्ययुग, १२वीं सदी--मध्ययुगीन कक्ष

(ख) गणेश; जावा, मध्ययुग, ९वीं सदी--मध्ययुगीन कक्ष

(ग) गरुड़; कम्बोडिया, मध्ययुग, १०वीं सदी--मध्ययुगीन कक्ष

चि० ८ (क) आलमगीर की मुहर के साथ फरमन; १८वीं सदी--मुसलमानी कक्ष

(ख) फ़ेएन्स का घड़ा; पारसी, १३वीं सदी--मुसलमानी कक्ष

(ग) उमर खैय्याम के भव्य के साथ खपड़ा; मुलतान, १७वीं सदी--मुसलमानी कक्ष

चि० ९ (क, ङ) मोहन-जो-दारो से पकी मिट्टी की मूर्ति--प्रागैतिहासिक कक्ष

(ख, ग) मोहन-जो-दारो की मुहरें— ,,

(घ) हड़प्पा की मुहरें— ,,

(च) कोशाम की पकी मिट्टी की मूर्ति—,,

(छ) नन्दनगढ़ की पकी मिट्टी की मूर्ति--,,

(ज) हड़प्पा की पकी मिट्टी की मूर्ति--,,

(झ) पिप्रावा का खोदित अवशेष-पात्र--,,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(ञ) नाल के चित्रित मिट्टी के बर्तन....,,
(ट) मध्य-एशिया की पकी मिट्टी की मूर्ति ,,
(ठ) भीटा से पकी मिट्टी की मूर्ति....,,

चि० १० नागरी-लिपि का विकास-क्रम दिखाती हुई चार्ट-- ऊपरी बरामदा

चि० ११ बंगला-लिपि का विकास-क्रम दिखाती हुई चार्ट-- ऊपरी बरामदा

चि० १२ प्रागैतिहासिक, आदैतिहासिक व ऐतिहासिक रूमानों व स्तम्भों को दर्शाता हुआ मानचित्र ।

--:०:--

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता के पुरातत्व विभाग के विशाल तथा परिपूर्ण संग्रह सबसे बड़े संग्रहालय के उपयुक्त माने जाते हैं और पूर्वी दिशा में ये संग्रह सबसे मूल्यवान समझे जाते हैं। इन सामग्रियों का विशद विवरण इस छोटी-सी पुस्तक में उपस्थित करना संभव नहीं है, इसलिए इस संक्षिप्त मार्ग-दर्शिका में केवल उनका विशेष परिचय मात्र दिया गया है जिससे दर्शक विभिन्न प्रकोष्ठों में संग्रहीत महान तथा अनमोल निधियों से सहज ही परिचित हो सके।

प्रवेश कक्ष

पूर्वीयुगीय मूर्तिकला—मौर्य व शुंग

संग्रहालय में प्रवेश करते ही मूर्तिकला के चार अनोखे निदर्शन दर्शक को आकृष्ट करते हैं। ये चार ही स्तम्भ-शीर्ष हैं जिनमें से दो मूल हैं और दो ढाँचे। इनके अलावा यक्ष और यक्षी की कई मूर्तियाँ हैं जिनमें केवल एक ही ढाँचा है। इस विभाग में ये मूर्तियाँ ही भारतीय मूर्तिकला के सबसे पहले निदर्शन हैं। मोहन-जो-दारो की 'सील' के बाद पशु के रूपायण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के काम में रामपुरवा के साँड़ सबसे उल्लेखनीय हैं, रामपुरवा का सिंह भी उत्कृष्ट निदर्शन है और हंस की पंक्ति भी अनोखी व निहायत स्वाभाविक है। सारनाथ के सिंहवाले स्तम्भ शीर्ष की विशेषताओं में पारसीक प्रभाव नज़र आता है, जिसका ढाँचा यहाँ रखा गया है और इस प्रकार की वस्तुओं में सर्वोत्कृष्ट है। इस काल के अन्तर्गत पटना के यक्ष-मूर्तियों में मौर्यकालीन चमक अब भी मालूम पड़ती है; परन्तु बेसनगर की यक्षी-मूर्ति को, जिसका भारहुत की ऐसी मूर्तियों से काफी मेल है, ई० पू० दूसरी शती के पहले नहीं रखी जा सकती। कल्प-द्रुम शीर्ष शुंग-काल का माना जाता है परन्तु इसकी मौर्यकालीन होने की भी संभावना है। साँड़वाले स्तम्भ-शीर्ष के चौरस चौकोर पत्थर में बेल-बूटों का नक्शा, रामपुरवा के सिंह का स्वाभाविक रूप, सारनाथ के सिंहवाले स्तम्भ शीर्ष के अधोभाग में सिंह, हाथी, साँड़ व घोड़े का एक दूसरे से एक धर्मचक्र द्वारा विभाजित होना तथा चार सिंहों की अद्भुत मिलावट एवं इन सबों की चमक देखने लायक है। पटना के दो यक्ष-मूर्तियों के कन्धों के पीछे दुपट्टे के ऊपर एक शिलालेख नज़र आता है, ये दोनों मूर्तियाँ उत्तरकालीन युग की होने पर भी इनकी चमक व अन्यान्य विशेषताएँ इनकी प्राचीनता को सूचित करती हैं। पटनेवाले यक्षों का जनेऊ की भाँति दुपट्टे को ओढ़ना, मोटा-सा कटी-सूत्र, बाजु-बन्द, गुलूबन्द, बेसनगर की यक्षी के चोटीवाले बाल, विस्तृत कमर-बन्द व मेखला की डोरी तथा परखम यक्ष के ढाँचे का उदरबन्द, कटी-सूत्र, व भारी गुलू-बन्द की सजावट इन मूर्तियों में खास दर्शनीय हैं। यहाँ जो कल्पद्रुम रखा गया है वह कुबेर के किसी मन्दिर के ध्वज या खम्भे के शीर्षभाग का एक अंश है। शंख, कमल फूल जिनसे सिक्के निकलने लगे हैं और धन से पूर्ण थैले व पात्र जिन्हें बेल-बूटों के नीचे सजाकर रखा गया है, ये निधियाँ बड़ी कुशलता से खोदी गई हैं।

ये सब सामग्रियाँ मौर्य या अशोककालीन कार्यों के नमूने-मात्र हैं। ऐतिहासिक काल के आरंभ होने के बाद मौर्य-युग की मूर्तिकला भारत की सबसे पहली मूर्तिकला मानी जाती है। ई० पू० ३३० में सिकन्दर द्वारा आकिमिनियन राज का खत्म किये जाने से बहुत-से पारसीक कारीगर भारत में चले आये थे और तभी तो हम मौर्य-कला में उनलोगों का असर देख पाते हैं। घंटाकृति स्तम्भ-शीर्ष जिनके ऊपरी भाग में हमेशा जानवरों की आकृतियाँ देखने को मिलती हैं ये सब इसी पारसीक प्रभाव का फल है। शीर्षदेश में जानवरों की जो आकृतियाँ मिलती हैं उनसे यह स्पष्ट मालूम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होता है कि इनके कलाकारों में जितना परिचय था उतनी ही जानकारी परम्परागत वृत्तियों से भी थी। इनकी कार्यावलियों में स्वाभाविकता की पूर्णता की झलक मिलती है एवं पारसीक कला की उच्च-कोटि की चिकनाहट इनकी विशेषता है।

अन्तर्राष्ट्रीय दरबारी मौर्यकाल की एवं ई० पू० २ री शती की शुंग-कला में काफ़ी अन्तर था, क्योंकि जहाँ सरलता व लौकिक-गुण से शुंग-कला संबंधित थी, वहाँ मौर्य-कला में देशी भावधाराओं पर सहज ही विदेशी प्रभाव आ पड़ा था। इसलिए जानवरों से शोभित अशोक-कालीन स्तम्भ विष्णु, कुबेर, मन्मथ आदि हिन्दू देवताओं के मन्दिरों में स्थापित ध्वज के सदृश होते हुए भी विदेशी प्रभाव से मुक्त नहीं हैं।

भारहुत कक्ष

पूर्वीयुगीय मूर्तिकला—शुंग, सातवाहन, कलिङ्ग

विन्ध्य प्रदेश में नागोड़ राज्य के भारहुत नामक स्थान से प्राप्त तोरण के ऐश्वर्यपूर्ण पुरावशेष से शुंग-कला का पूर्ण परिचय प्राप्त होता है। सरलता व स्वाभाविकता से ओत-प्रोत शुंग-कला में पारसी से भारतीय भावधारा ही ज़्यादा परिलक्षित होती है और यहीं पूर्वयुग की मौर्य-कला से इसका अन्तर है। पत्थर के ये घेरे, जिन्हें जनरल कनिंगहाम ने पूर्वी-तोरण के अंश के साथ निकाला था, इस कक्ष में रखे गये हैं और स्वदेशी कला की परम्परा को व्यक्त कर रहे हैं। यक्ष-यक्षियों तथा देवताओं के पूरे आकार की मूर्तियों से केवल इसी बात का अनुभव होता है कि इनके रचयिताओं ने सूक्ष्म विश्लेषण करने की पूरी चेष्टा की है और मनुष्य के शरीर-रचना-शास्त्र का सम्यक ज्ञान न होते हुए भी अंगों पर चिह्न अंकित करना अथवा साफा या वस्त्र पर सजावट का नमूना लगाना आदि कामों में वे सिद्धहस्त थे। इसी कारण इस कला में मूर्तियों को विभूषित करने का एक विशेष गुण नज़र आता है, खास कर सिरिमा-देवता व चुलुकोका की मूर्तियों में यह विशेषता पूर्ण रूप से निखर आई है।

भारहुत तोरण के स्तम्भ पर ई० पू० २ री शती का जो शिलालेख मिलता है उससे यह साबित होता है कि यह तोरण शुंग-राजाओं के राजकाल में बनवाया गया था और ब्राह्मी-लिपि में प्रत्येक आकृति के नीचे जो लेख मिलता है उससे उस आकृति का परिचय भी मिल जाता है। घेरे के मुडेरे में किसी दैव हाथी के मुंह से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कल्पबल्ली की चक्करदार लताओं का निकल आने तथा बीच-बीच में जातक की कहानियों के दृश्य नज़र आते हैं। सीधे खड़े स्तम्भों पर कमल एवं तमगे सदृश स्थानों पर जातक तथा बुद्ध के जीवन-दृश्य उत्कीर्ण किये गये हैं; कई स्तम्भों पर यक्ष तथा देवताओं के पूरे आकार की मूर्तियाँ मिलती हैं साधारणतः शिलालेखों से जातक की कहानियों का परिचय मिल जाता है परन्तु कभी-कभी अन्तर भी नज़र आता है। अनाथपिंडिक द्वारा जेतबन-आश्रम दान या बुद्ध के दर्शन के लिए प्रसेनजीत का आना आदि बुद्ध-जीवन के स्पष्ट-चित्रण के साथ-साथ आरामदूषक जातक आदि जातक की कहानियाँ भी आनन्द-वृत्ति के साथ उपस्थित की गई हैं, जैसे कई बन्दर पौधों को उखाड़ रहे हैं जिससे वे जड़ के आकार को मालूम करके उसी परिमाण में पानी ज़मीन में डाल सकें। कुछ ढाँचे में और कुछ मूल में बुद्ध-गया के खम्भों की मूर्तियों से शुंग-कला का उत्तरकालीन रूप का अन्दाज़ा किया जा सकता है। भारहुत व बुद्ध-गया के जेतवन वाले दृश्य पूर्वयुगीय कला के सम्यक रूप कहलाये जा सकते हैं।

बुद्धजी के पहले जन्म तथा इस जन्म की कुछ विशेष कहानियों का उद्धरण यहाँ अच्छा होगा क्योंकि ज़्यादातर ये कहानियाँ इस कक्ष की नक़ाशी के कार्यों के विषय हैं। लटुकिक जातक, जिसे शिला-लेख में लटुभ जातक कहा गया है, की कहानी इस प्रकार है--एक बटेर किसी धूर्त हाथी पर बदला लेता है। बोधिसत्व हाथी के रूप में जन्म लेता है और बटेर के बच्चों के प्रति प्यार दिखलाता है। परन्तु कपटी हाथी उन्हें कुचल डालता है और बटेर एक कौए को उसकी आँखें निकाल लेने को बहकाता है। मेढ़क के टर्रों के शब्द के भुलावे में पड़ कर वह चट्टान की खड़ी दीवार तक पहुँच जाता है और गिर कर मर जाता है। यह जानवर की एक अनोखी कहानी है जिसमें प्रायः सभी मानवीय भावनाओं को एक जानवर के चरित्र में भर दिया गया है।

छद्दन्त जातक, निग्रोधमिग जातक एवं महाकपि जातक में यह दिखाया गया है कि पशु में भी चारित्रिक महानता पाई जाती है--यह महान पशु पूर्वजन्म में बोधिसत्व के रूप में जन्म लेता है और बोधि-ज्ञान प्राप्त करने के गुणों को अपनाता है। छद्दन्त-जातक एक हाथी की कहानी है जिसने बनारस की रानी का ख्याल पूरा करने के लिए प्रसन्नता से अपने दाँत उत्सर्ग किये थे यद्यपि वह उस शिकारी को, जो उसे पकड़ने आया था, आसानी से मार सकता था। कहानी इस प्रकार की है--छै दाँत वाले एक उदार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हाथी के रूप में बोधिसत्व का जन्म हुआ था। जब उसने अपनी दो स्त्रियों में एक को कमल फूल उपहार दिये तो दूसरी जलने लगी। वह मर गई और बनारस की रानी के रूप में पुनर्जन्म लिया तो पहले जन्म की सारी घटनाएँ याद आईं। उसने बीमार होने का बहाना किया और हट करने लगी कि उसकी बीमारी तभी दूर हो सकती है जबकि उसे उस महान हाथी के दाँत ला दिये जायेंगे। उसके पति अर्थात् राजा ने उन दाँतों को लाने के लिए शिकारी भेजे। बोधिज्ञान की तुलना में अपने मूल्यवान दाँतों को तुच्छ समझ कर हाथी ने स्वेच्छानुसार अपने दाँत काट लिये और शिकारियों को दे डाले, परन्तु इससे हाथी को असहनीय वेदना सहनी पड़ी और अंत में मर भी गया। ये दाँत देख कर रानी को इतना पश्चात्ताप हुआ कि दुख के मारे वह भी मर गई।

निग्रोधमिग जातक की कहानी से भी उसी प्रकार का उपदेश मिलता है। बोधिसत्व ने स्वर्णमृग के रूप में जन्म लिया और शाही बाग़ में अपने दल के नेता बनकर रहने लगे। राजा का हिरन-शिकार खेलना नशा जैसा था और इस करतूत से अपने दल को बचाने के लिए उस मृग ने प्रतिदिन एक हिरन को शिकार के रूप में भेजना निश्चय किया। एक दिन जब एक गर्भवती हिरनी की बारी आई, बोधिसत्व को इतनी सहानुभूति आई कि हिरनी के बदले उसने आप अपने को सुपुर्द कर देना चाहा। राजा जब शिकार खेलने के स्थान पर पहुँचा व सारा किस्सा सुना तो राजा का हृदय इतना पिघल गया कि उन्होंने केवल स्वर्णमृग के जीवन को ही नहीं रक्षा की अपितु हिरण-शिकार ही छोड़ दिया।

महाकपि जातक का वर्णन इस प्रकार का है कि बोधिसत्व ने बन्दरों के नेता बनकर जन्म लिया था और स्वादिष्ट आम खाकर गंगा के किनारे रहने लगे थे। संयोगवश बनारस के राजा वहाँ आ पहुँचे, पेड़ को घेर डाला और तमाम बन्दरों को मारने के लिए तैयारी करने लगे। बोधिसत्व नदी के उस पार कूद पड़े और तुरन्त बाँस का एक पुल बनवा डाला। लम्बाई में पुल कुछ छोटा नज़र आया तो उन्होंने अपने शरीर को पुल के साथ जोड़ दिया और साथियों को अपने कंधे पर से पार करवा दिया; परन्तु इससे उन्हें अपने प्राण दे देने पड़े। राजा कपि-नेता की तीक्ष्ण-बुद्धि तथा स्वार्थहीन-भाव देख कर चकित हो गये और उनका योग्य सन्मान दिया।

मनुष्य के रूप में भी बोधिसत्व ने बुद्धि, उदारता एवं स्वार्थत्याग का भाव दिखा कर अपना जन्म सार्थक किया था। उन्होंने बिधुरपंडित का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जन्म लेकर राजमन्त्री के ज्ञान व विचक्षणता का परिचय दिया। अर्थ-शास्त्र पर वार्तालाप सुनने के लिए नाग-रानी विमला ने उन्हें आमंत्रण दिया और बीमारी का बहाना लेकर बोली कि वह तभी अच्छी हो सकती है जब कि बिधुर के दिल को लाकर उसे दिया जाय। रानी की बेटी ने अपने प्रेमिक पुन्नक से बिधुर का दिल लाने को कहा। पुन्नक बिधुर को इस शर्त पर राज़ी कर सका यद्यपि राजा ने चेष्टा की जिससे महान बिधुर इस शर्त को न मान ले। पुन्नक बिधुर को भगा ले गया और दिल को निकालने के लिए उन्हें मारना चाहा। इस पर बिधुर ने समझाया कि इस प्रकार उनके दिल को लेने की चेष्टा करना बेकार है एवं उन्हें रानी के पास ले जाने को कहा जिससे वे अपने दिल के सारे ज्ञान का भेद बता सके।

बुद्ध ने ठीक पहले जन्म में युवराज वेस्सन्तर के रूप में जन्म लिया जिसे सब कुछ दान देने में आनन्द आता था। उनके राज में एक हाथी था जिसकी बदौलत देश धन-धान्य से पूर्ण था। एक बार कलिंग देश जब अकाल से तबाह हो रहा था तो उस देश में समृद्धि लाने के लिए कलिंग के ज़नगण को युवराज ने अपने राज्य की सबसे अनमोल वस्तु उस हाथी को दान दिया। इससे उनके अपने देश के लोग क्रुद्ध हुए और वहाँ के राजा से उन्हें अपने पत्नी-पुत्रों के साथ बन को भिजवा दिया। बन में रहते समय युवराज ने प्रसन्नता से अपने पत्नी-पुत्रों को भी दान दिया। कहानी बड़ी ही हृदयस्पर्शी है, युवराज को एक भीषण परीक्षा का सामना करना पड़ता है परन्तु अंत आनन्ददायक होता है।

इन सभी कहानियों में एक ही विषय पर ज़ोर दिया गया है और वह है बोधिसत्व के महान् गुण और आत्मिक-बल से उन्नत स्वभाव क्योंकि इन्हीं गुणों के अधिकारी बोधिसत्व को गौतम-बुद्ध का जन्म लेकर महाबोधिज्ञान प्राप्त करना था। इसी कक्ष में बुद्ध के अपने जीवन की दिलचस्प घटनाओं को भी चित्रित किया गया है। 'मायादेवी का स्वप्न' के दृश्य में बोधिसत्व तुषित स्वर्ग से श्वेत-हस्ती के रूप में मायादेवी के गर्भ में प्रवेश करते हैं और तमगे पर के लेख से इस दृश्य का वर्णन भी मिल जाता है जहाँ लिखा है 'भगवतो उक्रन्ति' अर्थात् 'भगवान का अवतरण'। कोशल के राजा प्रसेनजीत का प्रभु से मिलने आना व उनके प्रति श्रद्धाज्ञापन, नागराज इरापत द्वारा प्रभु की वन्दना, राजा अजातशत्रु का साक्षात करना, गायक पंचशिखा को साथ लिए इन्द्रशाला गुफे में शक्र का प्रभु से मिलना आदि दृश्यों को तमगों पर उत्कीर्ण मिलता है एवं प्रत्येक दृश्य के साथ जो लेख मिलता है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उससे उस दृश्य का परिचय भी मिल जाता है। जिस तमगे पर माता को धर्म की व्याख्या सुना कर त्रयोत्रिंश स्वर्ग से बुद्ध के उतर आने का दृश्य खोदा गया है, वहाँ ऊपर और नीचे की ओर तीन सीढ़ियों पर बुद्ध के पदचिह्न से केवल यही नहीं मालूम होता कि पूर्वकालीन मूर्तिकला में बुद्धजी को कोई मनुष्य-रूप नहीं दिया गया और प्रतीक के माध्यम से ही समझाया गया; परन्तु अवतरण के भाव को दिखाने में भी कलाकार की निपुणता निखर आई है। भारहुत प्रकोष्ठ में बुद्ध-जीवन की दिलचस्प घटनाओं में जेतबन-दान एक अनोखा दृश्य है। अनार्थपिंडिका द्वारा जेतबन-बाग़ को अमीरी ढंग से खरीद लेना, बाग़ के सामने स्वर्ण-मुद्रा बिखेर देना आदि इस दृश्य का पूरा वर्णन इसके शिलालेख से मालूम किया जाता है।

विपश्यिन्, विश्वभु, क्रकुच्छन्द, कनकमुनि तथा कश्यप आदि अगले बुद्धों की मूर्तियों में अपने-अपने बोधि-वृक्ष के साथ इसी प्रकोष्ठ में प्रदर्शित की गई है। परन्तु यक्ष व यक्षियों के पूरे आकार की मूर्तियाँ भारहुत कक्ष की सबसे आकर्षक वस्तुएँ हैं। देवी सिरिमा देवता, चुलुकोका, यक्ष सुपवास, यक्षी सुदर्शना, यक्ष कुबेर आदि की सुन्दर मूर्तियाँ अपने-अपने शिलालेख के साथ दर्शकों को आकृष्ट करती हैं और खुदाई के काम में शिल्पी बड़े प्रयास से उस युग के वेश, आभूषण व अदाओं को बारीकी से दिखा कर शुंग-कला की विशेषताओं को अमर रूप देने में सफल हुए हैं। जो तोरण इस कक्ष में संग्रहीत पाया जाता है उसका कुछ अंश मूल है और कुछ अंश का ढाँचा बनवा कर इस प्रकार जोड़ दिया गया है जिससे भारहुत में अपनी स्थिति में इस तोरण के सम्पूर्ण रूप को हम मालूम कर सकें।

इसी कक्ष में भारहुत तोरण के संलग्न दक्षिण-भाग में बुद्ध-गया से प्राप्त कुछ पुरावशेष रखा गया है जिसका कुछ अंश मूल में है और कुछ ढाँचे में। खुदाई का काम भारहुत के कुछ बाद का जान पड़ता है। यहाँ भी जेतबन-दान का दृश्य नज़र आता है और शिल्पी की तकनिकी कुशलता कुछ उन्नत होने पर भी भारहुत जैसे प्राणमय नहीं है। भारहुत और साँची की मध्यवर्ती कला बुद्धगया की कला कहलाती है।

मध्यभारत की सातवाहन कला की पूर्वी अवस्था के कुछ नमूने इसी प्रकोष्ठ में संग्रहीत है जिनमें साँची से प्राप्त तोरण में शालभंजिका की एक मूर्ति है और बुद्ध-जीवन तथा जातक के कुछ दृश्यों के ढाँचे हैं जो भारहुत के समरूप दृश्यों से तुलनात्मक अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हैं। महाकपि जातक, श्यामा की करुणात्मक कहानी जहाँ बनारस के राजा ने भूल से अंधे माता-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पिता के इकलौते बेटे को मार डाला, उरूविल्व को बदलने के लिए प्रभु द्वारा चमत्कार दिखाना, पशु-भक्ति की पराकाष्ठा दिखाकर श्रावस्ती के एक बन्दर द्वारा मधु का प्रदान करना आदि साँची-स्तूप के तोरण की उभड़ी आकृतियों के ढाँचे के विषय-वस्तु हैं। विषय-वस्तु को स्वाभाविक रूप देने के लिए साँची के शिल्पी ने आन्तरिक प्रयत्न किया। प्रत्यक्ष रूप के प्रदान में शिल्पी की चेष्टा नज़र आती है और जभी तो पत्थर में चित्रण का काम संभव हो सका है। नक़ाशी के कामों में गहराई, दूरी व समतलता बताने का भी प्रयास है परन्तु अमरावती में सातवाहन काल के उत्तर-काल में आकर शिल्पी इन सब कामों में तकनिकी-पूर्णता प्राप्त कर सके हैं।

उड़ीसा से उदयगिरि गुफों की चित्रबल्लरियों के ढाँचे की जो श्रेणी इस प्रकोष्ठ में देखने को मिलती है वह समकालीन कलिंग-कला का निदर्शन है। जैन-पुराण की कथाएँ इन नक्काशियों के विषय हैं जिनकी पूरी पहचान अब तक भी नहीं मिल सकी! भारत के अन्यान्य भागों की तरह यहाँ भी पहाड़ काट कर नक्क़ाशी-पूर्ण ये गुफाएँ जैन-भिक्षुओं के निवास-स्थान के लिए बनवाई गई थीं। ये सब राजा खर्वेल के समय के हैं जिनके हाथीगुम्फ नामक प्रख्यात शिलालेख से पता चलता है कि वह कलिंग के राजाओं में से सबसे पराक्रमी व सर्वश्रेष्ठ थे।

पटने में एक छोटा-सा कठघड़ा मिला है जिसके खुदाई के काम किये हुए दो अर्गले और दो सीधे खड़े हिस्से मिलते हैं जिनमें से एक में अश्वमुखी यक्षी बच्चा लिए हुए दिखाई पड़ती है और दूसरे में मिथुन की मूर्तियाँ हैं। पटना के कुम्रहार से प्राप्त लकड़ी की अनुकृति बने मूल रूप को याद दिलाते हुए सुन्दर ढंग से बनाये गए एक कल्पित जन्तु (ग्रिफिन) की आकृति तथा राजगीर से प्राप्त फण इस प्रकोष्ठ में दर्शनीय हैं। कुम्रहार व राजगीर की दोनों वस्तुओं पर मौर्यकालीन चमक नज़र आता है।

लकड़ी के दो बल्ले, जिनमें पाँच छेद किए हुए हैं और ऊँचाई में सात फीट हैं, इस कक्ष की दो आकर्षक वस्तुएँ हैं। मौर्यसम्राट चन्द्रगुप्त के समय पाटलिपुत्र लकड़ी के जिस कठघड़े से घेरा हुआ था, ये बल्ले निश्चय ही उसी के अंश हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गांधार कक्ष

भारत का उत्तर-पश्चिम भाग कितनी ही संस्कृतियों का मिलन-केन्द्र था और सिकन्दर के धावे के बाद यूनानी प्रभाव इस इलाके में अपनी अमिट छाप छोड़ गया था। युनानों के बाद शक आये, शक के बाद कुशान और ये सब-के-सब पाश्चात्य कला से प्रभावित थे। मूर्तियों का अंगवर्णन, वेश-भूषा की सजावट, बालों का संवारना, सारी अदा-कदाएँ आदि सभी स्थानों पर इसी प्रभाव का अनुभव होता है। मनुष्याकार में बुद्धजी की मूर्ति पहले पहल गांधार से प्राप्त हुई एवं बुद्धजी एक युनानी युवक जैसे मालूम पड़ते हैं। बोधिसत्व की मूर्तियों में साफा, मयुरकण्ठी या झूले हुए उत्तरीय आदि सभी वस्तुएँ भारतीय भावधारा की हैं; परन्तु आकृति हमेशा युनानी रही। हारिती या मायादेवी आदि की स्त्री-मूर्तियों से यही विदेशी भाव झलकता है। ग्रीस-देशीय मद्यदेवता बाकुस-संबंधी दृश्य, अतलान्तिस, फूलों का गजरा बाहक, कॉरिथियन वर्ग के स्तम्भ-शीर्ष में यह प्रभाव विशेष रूप से नज़र आता है चाहे युनानी शिल्पी के आधीनभारतीय शिल्पियों ने खुद ही इन्हें बनवाया था।

गांधार कला में प्रथम श्रेणी की युनानी मूर्तिकला की सुन्दरता का अभाव है परन्तु इस शाखा की कुछ अनोखी कृतियाँ इस कक्ष में प्रदर्शित की गई हैं जैसे हारिती व पांचिका की मूर्ति। देशीय कला से तुलनात्मक अध्ययन के नाते गांधार कला में वर्णित बुद्ध-कथा बहुत ही दिलचस्प है और मायादेवी के पार्श्व से बुद्धजी को अपने असली रूप में निकल आना आदि कुछ विशेषताएँ, जो कि भारतीय कला में नहीं पायी जातीं, देखने योग्य हैं। कुछ मूर्तियों में उत्कीर्ण खरोष्ठी लिपि से तारीख का पता चलता है; परन्तु इससे किसी विशेष युग का निर्णय करना संभव नहीं होता। ३ री शती के लगभग इस शाखा का अन्त होने लगा और ४-५ ई० में एक नई शाखा का आविर्भाव हुआ जिसे सर जॉन मार्शल ने भारतीय-अफग़ान शाखा की आख्या दी; इस शाखा में महीन चूना या सिलिमट और पकी हुई मिट्टी की सुन्दर मूर्तियाँ बनने लगीं। अफग़ानिस्तान में जलालाबाद के समीप हड्डा नामक स्थान में इस शाखा का केन्द्र था; परन्तु

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत के तक्षशिला में इसका काफ़ी प्रचलन हुआ। पाँचवीं सदी में हूणों के आक्रमण के साथ इस शाखा का अंत हो गया। विभिन्न आकार व गुण-सम्पन्न बुद्ध व बोधिसत्व की मूर्तियाँ, जिनमें लोरियन टंगाई से प्राप्त शिला-लेख समेत बुद्धजी की विख्यात मूर्ति भी है, चारों ओर आधारों पर सजाये रखी गई हैं। धनियों (केसों) में वे सब खुदाई के काम मौजूद हैं जिनमें बुद्धजी की कथा व जातक की कहानियों को रूप दिया गया है। बुद्धजी की जीवन-कथाएँ दिखलाने वाली मूर्तियाँ, जो क्रमिक रूप से देखने को मिलती हैं, बहुत ही दिलचस्प हैं एवं तुलनात्मक अध्ययन के लिए भी काफ़ी महत्वपूर्ण हैं। हारिती व पांचिका की मूर्ति, हर्क्यूलिस, फलों का गजरा बाहक एवं अन्यान्य मूर्तियाँ, महीन चूने के बने मस्तक-भाग, जो गांधार-प्रकोष्ठ में प्रदर्शित किये गए हैं एवं साथ ही प्राग्-ऐतिहासिक कक्ष में तक्षशिला का सुन्दर संग्रह गांधार मूर्तिकला के अध्ययन के लिए बहुत ही मूल्यवान है। गांधार प्रकोष्ठ के मध्य-भाग में जो सुन्दर छोटा-सा मन्नत-स्तूप है वह भी कम आकर्षक नहीं है। गांधार इलाके के स्तूप का कुछ ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह एक बहुत ही सुन्दर उदाहरण है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुप्त व मध्ययुगीन प्रकोष्ठ

[पूर्वकालीन मूर्तिकला--मथुरा से कुशान, अमरावती से सातवाहन। गुप्त मूर्तिकला—भूमरा, सारनाथ आदि स्थानों से। मध्ययुगीन मूर्तिकला--उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, उड़ीसा, मध्यभारत, दक्षिण भारत तथा दाक्षिणात्य; जावा व कम्बोडिया की मूर्तिकला।]

गांधार प्रकोष्ठ के संलग्न पूर्वी ओर दर्शकों को एक विशाल प्रकोष्ठ से परिचय होता है। यह प्रकोष्ठ बीस वीथियों में विभक्त है एवं भारत के विभिन्न स्थानों से पूर्वीकालीन, गुप्त तथा मध्ययुगीन एवं जावा तथा कम्बोडिया से प्राप्त मूर्तिकला के निदर्शन इस प्रकोष्ठ में प्रदर्शित किये गये हैं।

कुशान मूर्ति-कला

पहली व दूसरी शती की कुशान शाखा की मूर्तिकला भारहुत, पटना व बुद्धगया की पूर्वकालीन देशी कला का ही उन्नत रूप है। पूर्वकालीन मथुरा के चारों ओर इस कला का विकास हुआ था और इस कला के अनुपम निदर्शन इसी इलाके से प्राप्त होते हैं। मथुरा इस समय उच्च कोटि की कला का एक मुख्य केन्द्र था जहाँ से भारत के अन्यान्य स्थानों में मूर्तियाँ भेजी जाती थीं। श्रावस्ती, मथुरा, सारनाथ तथा और कई स्थानों में भिक्षु बल द्वारा उत्सर्गित बोधिसत्व की मूर्तियों में इस कला का एक उत्कृष्ट उदाहरण देखने को मिलता है। बुद्ध की कुशान मूर्तियाँ कुछ मोटी व भारी होती हैं और गुप्तकालीन बुद्ध के लावण्य का अभाव रहता है; बनारस के भारत कला-भवन में रखी हुई यक्षियों तथा पानी व खाद्य हाथ में लिये सुन्दरियों की मूर्तियां इस कला के सुन्दर निदर्शन हैं। मथुरा संग्रहालय की युनानी ढंग की हारिती की मूर्ति से स्पष्ट होता है कि गांधार शाखा पर पश्चिमी प्रभाव का ज़ोर था, परन्तु मथुरा की कुशान मूर्तियाँ गांधारीय यानी विदेशी प्रभाव से मुक्त हैं। हर्क्यूलिस व सिंह, युनानी मद्य-देवता बाकुस एवं मथुरा की हारिती की मूर्तियों में गांधारीय प्रभाव स्पष्ट प्रतीयमान है जहाँ लम्बे कोट व ऊँचे (बूट) जूते पहने हुए कनिष्क की मूर्ति में तुर्की प्रभाव की झलक है। इस काल में जो मूर्तियाँ देशी-ढंग से बनवाई गई थीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनमें ऐसे प्रभाव नज़र नहीं आते--साफा बाँधे हुए बोधिसत्व, आरपार दिखलाने वाले वस्त्र से सजी हुई यक्षी, अथवा सिर मुँड़े हुए या दाईं ओर बाल घुँघराये व कामदार किनारे के प्रभामण्डल वाले बुद्ध, अथवा छाती पर श्रीवत्स चिन्ह के साथ अकेले या चौमुँह के रूप में जैन तीर्थंकरों की मूर्तियों में पूर्वकालीन देशी भाव-धारा की स्पष्ट छाप पायी जाती है जो गुप्तकाल में चरम कोटि को प्राप्त कर सकी थी।

इस कक्ष में जितनी मूर्तियाँ प्रदर्शित की गई हैं उनमें से युनानी मद्य-देवता बाकुस सम्बन्धी दृश्य, हर्क्यूलिस व सिंह मथुरा से प्राप्त कुशान-कला में गांधारीय प्रभाव के निदर्शन हैं। श्रावस्ती से बोधिसत्व की मूर्ति कुशान-बुद्ध का एक सुन्दर उदाहरण है और यह भिक्षु बल द्वारा प्रदत्त बुद्ध की मूर्तियों में से एक है जिसका प्रमाण आधार के नीचे के शिलालेख से मिलता है। बुद्धगया से प्राप्त बोधिसत्व एक उत्तरकालीन मूर्ति भी, जिसके आधार के नीचे भी एक शिलालेख है, उत्तम निदर्शन है। स्त्री-अंग के सौष्ठव के नाते कुशान शिल्पी की सबसे अनोखी कृति भूतेश्वर की यक्षियों की तीन मूर्तियाँ हैं (चि० ३ डी)। इन्द्रशाला गुफे में बुद्ध से इन्द्र की साक्षात वाली मूर्ति भी अपना निजी महत्व रखती है। कणिष्क की मूर्ति का ढाँचा, जिसके नीचे उनका नाम खोदा हुआ मिलता है, सचमुच उस राजा का असली चित्र जैसा ही प्रतीत होता है। भारतीय-पारसिक स्तम्भ-शीर्ष, जिनमें सिंह का शरीर, पंछी के पर तथा मनुष्य के मुँह वाले इहामृग की आकृतियाँ खोदी गई हैं, सिर पर सुविन्यस्त घुंघराए बाल व पगड़ी, कुशान-कला का प्रमाण देते हैं।

विपरीत प्रकोष्ठ में बुद्ध की एक उपविष्ट मूर्ति है जिसका श्रावस्ती के भिक्षु बल की बुद्ध-मूर्ति से काफ़ी मेल है परन्तु आधार के नीचे के लेख से मालूम होता है कि यह कुछ समय बाद बनवायी गयी थी। कुशान और गुप्त के अन्तवर्ती काल की भी कुछ उपविष्ट बुद्ध-मूर्तियाँ इसी स्थान पर प्रदर्शित की गई हैं। प्रकोष्ठ के मध्य-भाग में गुप्त-कला की मुख्य परम्परा बताते हुए दो सुन्दर बुद्ध-मूर्तियाँ विद्यमान है जो मथुरा से प्राप्त गुप्त-कला की सूचक हैं।

सातवाहन मूर्ति-कला

कुशान के संलग्न प्रकोष्ठ में अमरावती की सातवाहन मूर्तिकला के निद-र्शन हैं जो संख्या में कम परन्तु काफ़ी मूल्यवान संग्रह है। इन निदर्शनों की कई खास विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं जिनसे काल व स्थान-भेद को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्पष्ट मालूम किया जा सकता है । सातवाहन के राजा पराक्रमी थे; जिन्होंने ई० पू० २ री शती से ई० २ री शती तक दाक्षिणात्य में राज किया था। इन राजाओं की पश्चिमी राजधानी प्रतिष्ठान में थी और इसलिए पश्चिमी भारत के इसी स्थान में उनके बहुत-से स्मारक पाये जाते हैं। पूर्वी दिशा में अमरावती उनकी राजधानी थी जहाँ उत्तरकालीन सातवाहनों के समय एक अनुपम स्तूप बनवाया गया था जिसमें खुदाई का अनोखा काम नज़र आता है। अमरावती की मूर्तियों से सातवाहन कला का पूर्णरूप से प्रतिबोध होता है। अमरावती-स्तूप के घेरे जातक की कहानियों, अवदानों तथा बुद्ध-जीवन की दृश्यावलियों से शोभित हैं। इस कला को चार विभिन्न कालों में विभक्त किया जा सकता है। पहले काल में जिन मूर्तियों का निर्माण हुआ वे बहुत पहले की जान पड़ती हैं और भारहुत-कला की समकालीन है। दूसरा काल सम्भवतः पहली शती से आरंभ हुआ और धानी के रूप में स्तूप के शिला-फलक पाये जाते हैं जिनमें बुद्ध का बोधि-ज्ञान-लाभ, उनका पहला बयान व महापरिनिर्वाण बुद्ध के जीवन की ये तीन घटनाएँ उत्कीर्ण की गई हैं; शाक्यसिंह के प्रतीक सिंह व उस पर त्रिरत्न भी नज़र आते हैं। इसी काल में बड़े-बड़े पूर्णघट व नाग की मूर्तियाँ भी पाई जाती हैं। तीसरे काल में, जो २ री शती के करीब माना जाता है, चित्ताकर्षक घेरे की रचना हुई जिसमें शिल्पी की कुशलता का परिचय मिलता है। विषय-वस्तु की बहुलता, सजावट की विविधता व तकनीकी कुशलता की विभिन्नता को ध्यान में रखकर कलाकार का सफल प्रयास सर्वमान्य है। चौथे अर्थात् शेष काल में कुछ लम्बी-सी मूर्तियाँ मिलती हैं जो चैत्य-रूपी शिला-फलक में उत्कीर्ण की गई हैं; इनके अलावा इस काल में बुद्ध की भी कुछ मूर्तियाँ पायी जाती हैं।

इस प्रकोष्ठ में पहले काल की अवधि में कोई मूर्ति नहीं है परन्तु दूसरे कालों में अलग-अलग मूर्तियाँ प्रदर्शित की गई हैं। आनन्दोन्मत्त गाते हुए देव चारण व नाचती हुई नटियों के साथ बोधिसत्व का अवतरण एवं माया देवी का बुद्धजी का श्वेतहस्ती के रूप में गर्भ में प्रवेश करने का स्वप्न, जो लम्बे मुदेड़े में अनुपम ढंग से खोदे गये हैं, इस प्रकोष्ठ की अनमोल वस्तु है (चि० २ ए०)। यहाँ जोड़े हुए तीन टुकड़ों की जो कृती नज़र आती है, उनसे द्वितीय काल के बने धानी-सदृश शिला-फलक का परिचय मिलता है और जिनसे मूल दृश्य का अन्दाज़ा किया जा सकता है। इन्हीं के साथ इसी काल का एक पूर्णघट भी देखने योग्य है। बोधि-प्राप्ति, पहला व्याख्यान व महापरिनिर्वाण बुद्ध-जीवन की ये तीन मुख्य घटनाएँ बोधि-वृक्ष, चक्र व

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्तूप के प्रतीकों द्वारा दिखाई गई हैं। मुदेड़े के पीछे का अंश, जो घेरे के सम्पूर्ण बाहरी भाग में चक्करदार रास्ते की भाँति बनवाया गया था और जिसमें विभूषित करने योग्य फूलों के गजरे लेकर सुसज्जित यक्ष-वाहक की मूर्ति खोदी गई है, इस प्रकोल्ठ की दूसरी आकर्षक वस्तु है। दो अर्गल, जो कमल की पंखुड़ियों के आकार में बनवाये गये हैं और जिनकी बनावट में कोई विशेषता नहीं नज़र आतीं, बड़ी कुशलता से तमगों में खोदे गये हैं। बुद्ध जी की जो दण्डायमान मूर्ति इस प्रकोष्ठ में नज़र आती है वह अन्तिम काल का निदर्शन है।

गुप्त मूर्तिकला

विपरीत प्रकोष्ठ में भुमरा की एवं इसके संलग्न और तीन प्रकोष्ठों में सारनाथ व अन्यान्य स्थानों की गुप्तयुगीन मूर्तिकला का संग्रह है।

गुप्त-युग में स्वदेशी भारतीय कला का पूर्ण विकास हुआ था। गुप्त-शासन-काल में कला, साहित्य व विज्ञान की चरम उन्नति हुई थी। इस युग में कुशान-युग की आकर्षक मूर्तियों को पूर्णता मिली और इस युग की नक्क़ाशी का कुछ काम सुन्दरता, कोमलता व सूक्ष्मता के भावों का पूर्ण द्योतक हैं। सारनाथ से प्राप्त व्याख्यान-रत बुद्ध व पद्मपाणि और नागोड़ राज्य के खोह नामक स्थान से प्राप्त एकमुख लिंग की मूर्ति को एक बार देखने से भुलाया नहीं जा सकता। देवघर व भुमरा जैसे स्थानों के गुप्त-मन्दिर में पत्थर पर खुदाई का काम एवं पकी मिट्टी के बड़े-से चौखट्टे अनुपम हैं। भीटा, भीटरगाँव, रामनगर, राजगीर एवं अन्यान्य स्थानों से भी इस युग के पकी मिट्टी के बड़े-बड़े चौखट्टे मिले हैं। मथुरा तथा भारतीय संग्रहालय में सुशोभित प्रभामण्डल के साथ बुद्ध की जो मूर्ति संग्रहीत है, वही इस युग की मूर्तिकला का उत्तम निदर्शन है। सारनाथ से बुद्ध जी की भव्य-मूर्ति, चौखट में खोदित शेषनाग पर शोभित विष्णु की मूर्ति, देवघर के गजेन्द्र मोक्ष व नर-नारायण, ग्वालियर राज्य के उदयगिरि गुफे के बराह की विराट मूर्ति व नक़ाशी के अन्यान्य काम एवं अजन्ता की प्रख्यात मूर्तियाँ जो कि गुप्त-कला के ऐश्वर्य का प्रमाण देते हैं, इसी कक्ष में सजा कर रखे गये हैं। आसाम के दह-पर्वतिया नामक स्थान से प्राप्त मन्दिर की द्वाररक्षिका के रूप में गंगा व जमुना की मूर्तियाँ गुप्त-कला के अनुपम दान हैं। इरान से बराह की जो मूर्ति प्राप्त हुई है वह कला में पशु के रूप को दिखलाने का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।

भुमरा की मूर्तियों के प्रकोष्ठ के संलग्न मस्तक के पीछे प्रभामंडल शोभित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुप्त-कला की जो अनुपम बुद्ध-मूर्ति मथुरा से प्राप्त हुई है, उसका उल्लेख पहले ही किया गया है। भुमरा मन्दिर की मूर्तियाँ गुप्त-कला के सूक्ष्म-काम का प्रतिरूप है। मुक्ता-यज्ञोपवीत पहने हुए द्वारपालों की मूर्तियाँ भी गुप्तकला के उत्तम उदाहरण हैं। उनका बाल संवारना भी गुप्त-कला की विशेषता रखता है। अंगों की बनावट में गुप्त-कला की कोमलता व लावण्य की झलक है। गणेश की मूर्ति में इस कला का चरम विकास हुआ है। आनन्दोन्मत्त व नाचते हुए पंक्ति-बद्ध गणों की आकृतियों में विभिन्न स्थितियाँ व अंगों के भाव नज़र आते हैं। इन मूर्तियों की बनावट से बार-बार यही बात निखर आती है कि गुप्तकालीन शिल्पी ने किस प्रकार एक ही लय को दूर करने के लिए कितने विभिन्न विषयों के ज़रिए अपने भावों को व्यक्त किया है और आवश्यकता के अनुसार कितने विभिन्न विचारों तथा विभूषित करने योग्य विभिन्न नमूनों को अपनाया है। चैत्याकार झरोखों की मूर्तियों में उत्तरी वेष व ऊँचे जूते (बूट) पहने हुए सूर्यदेव की मूर्ति कुशान-युग की पूर्वकालीन कला की याद दिलाती है। मध्य भारत के भुमरा नामक स्थान के शैव-मन्दिर से जो टुकड़े मिले हैं उसी का संग्रह इसी कक्ष में प्रदर्शित किया गया है। इसी से संलग्न तथा विपरीत प्रकोष्ठों में जो मूर्तियाँ रखी गयी हैं उनमें ज़्यादातर प्रभामंडल विशिष्ट दंडायमान या उपविष्ट बुद्ध-मूर्तियाँ देखने को मिलती हैं, इनके अलावा बोधिसत्व-पद्मपाणि व तारा की भी दो सुन्दर मूर्तियाँ हैं, यहीं कई चौखट्टे भी हैं जिनमें बुद्धजी का जन्म, स्नान, निष्क्रमण, प्रलोभन, बोधिज्ञान, पहला व्याख्यान, रत्नजटित सीढ़ी से स्वर्ग से अवतरण व परिनिर्वाण जैसे बुद्ध-जीवन की मुख्य घटनाएँ खोदी गई हैं। सारनाथ से प्राप्त सबसे विख्यात व्याख्यान-रत बुद्ध मूर्ति की भाँति बुद्ध की दूसरी कोई मूर्ति सारनाथ के इस संग्रह में उत्कृष्ट नहीं है फिर भी इन सभी मूर्तियों का अपना-अपना महत्व तथा लावण्य है।

इसके पार्श्ववर्ती प्रकोष्ठ में विभिन्न स्थानों से प्राप्त गुप्तकला की मूर्तियों का संग्रह है। पहले ही एक सुन्दर द्वार नज़र आता है जिससे गुप्तकालीन मन्दिर की याद आती है और जिसके दोनों तरफ द्वार-रक्षिका के रूप में मकरवाही गंगा और कुर्मवाही यमुना की दो मूर्तियाँ हैं। बिहार के राजौना नामक स्थान के दो खम्भों का निर्माण एक विशेष ढंग से हुआ है और जिनमें अर्जुन का तप करना, शिवजी का गंगा को ग्रहण करना आदि दृश्य खोदे गये हैं। उसी शिला-फलक में गणेश व कार्तिकेय की मूर्तियाँ अनुपम ढंग से खोदी गयी हैं और ये इस प्रकोष्ठ में देखने योग्य मूर्तियाँ हैं। बुद्ध के मार-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धर्षण का जैन रूपान्तर, यजमानों से भयभीत तीर्थंकर, महेश की एक चमकदार मूर्ति, राहु के साथ नवग्रह शिला-फलक का सुचित्रित अंश, एक युवा महापुरुष तथा बरामदे में एक रसिक युगल इस प्रकोष्ठ की गुप्त-मूर्ति-कला के निदर्शन हैं।

मध्ययुगीन मूर्तिकला

विपरीत प्रकोष्ठ में उत्तर-प्रदेश से प्राप्त मध्ययुगीन मूर्ति-कला प्रदर्शित की गई है। उमा-महेश्वर वर्ग की एक सुन्दर मूर्ति (चि० ४ सी०), मस्तक विहीन दो उपविष्ट मूर्तियाँ, मुकुट पहने हुए बुद्ध, एकमुख लिंग, अनुचर के सहित सूर्य की वृहदाकार मूर्ति एवं कुछ और मूर्तियाँ इस युग की कला के निदर्शन हैं।

बनारस की शाखा से उत्तर-प्रदेश की मध्ययुगीन कला का सम्यक ज्ञान होता है; सिंहनाद तथा पद्मपाणि आदि महोवा की मूर्तियों से इस कला का विशेष परिचय मिलता है। इस शाखा के शिल्पियों ने गुप्त-परम्परा को अपनाया है जिसकी छाप इस शाखा की पूर्वकालीन रचनाओं में पूर्ण रूप से विद्यमान है परन्तु उत्तर-काल में इस शाखा की अपनी विशेषताएँ साफ नज़र आती हैं। इस शाखा में मुखमण्डल पूर्ण गोलाकार हो जाता है, जटा-मुकुट कुछ लम्बा-सा होता है, ठुड्ढी व नाक कुछ नुकीली होती हैं, पैरों की तुलना में धड़ कुछ छोटा होता है, बनाव-शृङ्गार कुछ प्रगटित-भाव से दीखता है, रेखाएँ कुछ ज़्यादा कोनवाली मालूम होती हैं। अविवेकी रूप से प्रत्येक पुरुष-देवता की छाती पर चार पंखुड़ियों वाले कमल-फूल जैसे श्रीवत्स-चिन्ह दीख पड़ता है और कला की कुछ अवनति होने पर भी मूर्तियाँ सुन्दर व देखने योग्य हैं।

इस शाखा में बौद्ध देव-देवियों की अनेक मूर्तियाँ हैं और सारनाथ से ये प्राप्त हुई हैं जो बौद्ध-धर्म का एक प्रसिद्ध केन्द्र था। 'नलगिरि दमन' जैसे बुद्ध-जीवन के पूर्वकालीन विषयों में प्रधान मूर्ति को दूसरी मूर्तियों से कुछ बड़े आकार में उपस्थित किया गया है; गुप्तकला की भाँति प्रधान दृश्य के चारों ओर बुद्ध का जन्म, बोधिज्ञान, पहला व्याख्यान, संकिस स्वर्ग से अवतरण आदि बुद्ध-जीवन की घटनाएँ भी दिखाई जाने लगीं। प्रधान मूर्ति के ठीक ऊपर कोने में स्तूप को दिखाना, बुद्ध को मुकुट पहनाना व आभूषित करने का झुकाव मध्ययुगीन कला की विशेषता है। और इस नाते बिहार की समकालीन मूर्तिकला से सामंजस्य है। प्रभामंडल पर पंखुड़ियों का साँचा जो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कि मूर्तिकला की विशेषता थी अब भी जारी रहा और प्रधान मूर्तियों के दोनों ओर उड़नेवाले गन्धर्वों की आकृतियाँ पूर्वकालीन कार्यों की याद दिलाती हैं।

इसके बाद के चार प्रकोष्ठों में बिहार से प्राप्त मध्ययुगीन मूर्तियाँ प्रदर्शित की गई हैं। उत्तर-प्रदेश की तरह बिहार में भी मध्ययुगीन कला पूर्वकालीन गुप्तकला का ही उन्नत रूप था। बिहार की पूर्वकालीन मूर्तियों में गुप्त-परम्परा की झलक साफ़ नज़र आती है जो कुछ शताब्दियों तक कायम रही। नालन्दा, बुद्धगया, राजगीर व कुर्किहार से बिहार शाखा की काफ़ी मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। नालन्दा बौद्ध-मूर्ति निर्माण कला व शैली (स्टाइल) का प्रख्यात केन्द्र था एवं समस्त पूर्वी भारत, यहाँ तक कि जावा व सुमात्रा इस प्रभाव से काफ़ी प्रभावित थे; परन्तु उत्तर-काल में अपनी स्वतंत्र स्टाइल का आविर्भाव हुआ। सारनाथ की गुप्त-मूर्तिकला की भाँति तथागत की मूर्ति के चारों ओर बुद्ध-जीवन के विभिन्न दृश्य भी दिखाये गये हैं। इस शाखा के विभिन्न निदर्शनों में बौद्ध देव-देवियों का सम्यक परिचय मिल जाता है एवं तारा, लोकेश्वर, मंजुवर, मारीची की व अन्यान्य कई सुन्दर मूर्तियों ने इस प्रकोष्ठ को आकर्षक बनाया है। मूर्ति के ऊपर बौद्ध-मंत्र उत्कीर्ण मिलता है और कभी-कभी उत्सर्ग करनेवाले का नाम तथा वेदी के समीप उसकी छोटी-सी मूर्ति भी खोदी गई है। बिहार शाखा की मध्ययुगीन कला में आभूषित मुकुट पहने हुए बुद्ध की मूर्तियाँ प्रायः नज़र आती है।

हिन्दू देव-देवियाँ भी बड़े सुन्दर ढंग से प्रदर्शित किये गये हैं, कई मूर्तियाँ यथेष्ट बड़े आकार की हैं और प्रायः सभी मूर्तियों में सुन्दर नक्क़ाशी का काम किया हुआ है। हर-गौरी, चक्र व गदा देवी के साथ विष्णु, सूर्य, बराह व वामन की मूर्तियाँ सबसे लोकप्रिय हैं। इस शाखा की मूर्तियाँ आम तौर से कुछ मोटी व दृढ़ांग की हैं; लेकिन प्रत्येक मूर्ति में लावण्य की झलक नज़र आती है। बिहार व बंगाल में पाल-कला की उन्नति हुई, फिर भी मूर्तियों की आकृति एवं अंग-रचना में बिहार-शाखा अपनी एक विशेषता रखती है। रत्न-जटित आभूषण व मुकुट, फूलों के साँचे में बने हुए वस्त्र, व स्त्री-मूर्तियों के अलंकार इस कला के विशेष आकर्षण हैं। चार प्रकोष्ठों में पत्थर तथा धातु की वस्तुएँ प्रदर्शित की गई हैं; पहले के दो और तीसरे प्रकोष्ठ के आधे अंश में बुद्ध, बोधिसत्व, तारा एवं अन्यान्य बौद्ध तथा हिन्दू देव-देवियों की मूर्तियों का प्रशस्त संग्रह दिखलाया गया है।

बाहरी बरामदे में बिहार से प्राप्त मध्ययुगीन बौद्ध व हिन्दू मूर्ति-कला का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समावेश है जिससे प्रतिमा-लक्षण-शास्त्र का भी सम्यक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, इनमें से पृथ्वी को ऊपर उठाते हुए बराह तथा खंडित विष्णु की मूर्तियाँ आकर्षक हैं। बुद्ध-मूर्तियों में खासकर दो मूर्तियाँ हैं जिनमें मध्य-कालीन मूर्तिकला की छाप है और जो अब भी गुप्त-कला के प्रभाव के निदर्शन हैं। उपहार-रीति से प्राप्त एवं बौद्ध-धर्मसूत्र का उल्लेख किये हुए शिलालेख महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इन साधनों से मूर्तियों के संभाव्य समय की धारणा की जा सकती है। हिन्दू मूर्ति-कला में सूर्यदेव की प्रारंभिक मूर्तियों का एक सुन्दर निदर्शन है। नाग-नागिन तथा रति व प्रीति के साथ मन्मथ की मूर्तियों की बनावट बहुत ही सुन्दर है जिससे बिहार की मध्यकालीन शिल्पियों की अद्भुत कुशलता से परिचय होता है। पास के दो प्रकोष्ठों में बंगाल की मूर्ति-कला का संग्रह विद्यमान है जिससे बंगाल के विद्वान डा० बी० सी० लॉ ने संग्रहालय को उपहार के रूप में दान दिया है।

नालन्दा, कुर्किहार, बुद्ध-गया आदि मगध क्षेत्र के स्थानों में जिस प्रकार पाल-शाखा की मूर्ति-कला की उन्नति हुई थी; उसी प्रकार दिनाजपुर, राजशाही, ढाका, त्रिपुरा आदि बंगाल के स्थानों में भी उस कला के ऐश्वर्य का विकास हुआ था। मध्ययुगीन कला में पूर्वकालीन गुप्त-कला के विकास का सिलसिला पहाड़पुर की मूर्तियाँ व पकी मिट्टी के अलंकृत टुकड़ों से अध्ययन किया जा सकता है। बाँकुड़ा से प्राप्त शक्तियों के साथ विष्णु तथा तीर्थंकरों की पत्थर की बनी सुन्दर मूर्तियाँ सबसे पहले के निदर्शन मानी जाती हैं। विष्णु की वृहदाकार मूर्तियाँ, भारतीय संग्रहालय में सदाशिव की उत्कीर्ण मूर्ति, राजशाही संग्रहालय के सूर्य, विष्णु व पार्वती, ढाका संग्रहालय के नटेश, मत्सावतार, भृकुटी, पर्णशवरी, हेरुक व अन्यान्य मूर्तियाँ इस युग की उच्च कोटि की मूर्ति-कला का प्रमाण देती हैं। तकनीकी कुशलता में पाल-युगीय पत्थर की बनी मूर्तियाँ अतुलनीय हैं एवं रेखाओं की खुदाई की ओर से ऐसा मालूम होता है कि ये किसी धातु की बनी हैं (चि० ४ ए०)। बौद्ध व हिन्दू देव-देवियों की मूर्तियों का संग्रह उत्तम है जिनमें सूर्य, विष्णु, हर-गौरी, तारा व लोकनाथ की मूर्तियाँ ख़ास कोटि की हैं। इन सभी मूर्तियों में बंगाल की पूर्वी-पाल शाखा की कुछ विशेषताएँ नज़र आती हैं। शिवजी को सदा ऊर्द्धरेत की अवस्था में दिखाया जाता है, नटेश के रूप में वह साँड़ पर नाचते हैं, कमल पर बौद्ध देवताओं की भाँति विष्णु शंख, चक्र व गदा लिये रहते हैं। बंगीय साहित्य परिषद में सागरदीघी से प्राप्त विष्णु की-सी मूर्तियों में महायानी प्रभाव स्पष्ट प्रतीयमान है। अंगों की पतली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बनावट, मुखाकृति व आँखों का विन्यास आदि में बंगाल शाखा की मध्य-युगीन कला से नेपाली कला का काफ़ी मेल नज़र आता है। धातु के कामों में रंगपुर से प्राप्त काँसे की मूर्तियाँ उत्तम निदर्शन हैं एवं दो प्रकोष्ठों में मूर्तियों का संग्रह प्रदर्शित किया गया है।

भुवनेश्वर के मुक्तेश्वर, लिंगराज, राजरानी एवं कोनारक के सूर्य-मन्दिर से उड़ीसा के मन्दिरों की मूर्ति-कला के ऐश्वर्य का अनुभव किया जा सकता है। मुक्तेश्वर मन्दिर की सुशोभित मूर्तियाँ उड़ीसा के मन्दिरों की मूर्ति-कला में सर्वोत्तम मानी जाती है। राजरानी मन्दिर के प्रवेश-द्वार पर खम्भे को लपेटे हुए नाग-नागिन की शायद ही कोई तुलना हो सकती है। मुखलिंगम्, भुवनेश्वर व खिचिंग के पूर्वकालीन मन्दिरों में अलंकृत करने के साधन के रूप में नाग-नागिन की मूर्ति को बड़े मनोरम ढंग से खोदा गया है। हाथी, घोड़ा व मनुष्य की दीर्घकाय मूर्तियाँ व रथ-चक्र की तीलियों पर नक्काशी के अलंकृत कार्य, जो कोणार्क के मन्दिर में देखने को मिलते हैं, मध्ययुगीन मूर्तिकला के शिल्पियों के चातुर्य व कुशलता का साक्ष्य देते हैं। खजुराहो व उसके समीप के स्थानों के मध्यकालीन मन्दिरों की तरह उड़ीसा के मन्दिर-गात्र में भी काम-शास्त्र के बंधों का उल्लेख करते हुए प्रेम-सम्बन्धी दृश्य उत्कीर्ण किये गये हैं। उड़ीसा की मूर्तियाँ बड़ी मनमोहक होती हैं, वीर्य व प्राण भरे रहते हैं, पुष्ट परन्तु साथ ही साथ बड़ी सुन्दर लगती हैं। ऊर्ध-रेत शिवजी जैसी कुछ मूर्तियों में उड़ीसा मूर्तिकला में बंगाल के लक्षण स्पष्ट नज़र आते हैं, लेकिन कुछ ऐसी विशेषताएँ भी हैं जिनसे इन दोनों प्रान्तों की मूर्तियों का अन्तर भी मालूम किया जा सकता है। उड़ीसा से हिन्दू, बौद्ध व जैन सभी धर्म की मूर्तियों का निर्माण हुआ है। जयपुर की मातृकाएँ, ललितगिरि के बोधिसत्व व भुवनेश्वर की अलंकृत नायिकाएँ, जो खजुराहो व विन्ध्य प्रदेश की ऐसी मूर्तियों की याद दिलाती हैं, मध्य-युगीन उड़ीसा कला के उत्कृष्ट निदर्शन हैं। मयूरभंज से प्राप्त मूर्तियाँ उड़ीसा-कला की एक विशेष शाखा की हैं जिसमें सौन्दर्य व लावण्य प्रत्येक मूर्ति में विशेष रूप से मिला हुआ है। (चि० ५ सी०)। इस कक्ष में तथा बरामदे के एक अंश में मध्ययुगीन उड़ीसा मूर्तिकला के अनुपम निदर्शन प्रदर्शित किये गये हैं।

मध्य-भारत की मूर्तिकला गुप्त-परम्परा द्वारा प्रभावित है एवं इस कला के उत्कृष्ट उदाहरण उदयगिरि व अन्यान्य स्थानों के नक़ाशी के कामों में पाये जाते हैं। मध्यकाल के मध्य-भारत में जोगिनी मन्दिरों में दुर्गा देवी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
के साथ जो चौंसठ जोगिनियों की मूर्तियाँ मिलती हैं, वे सबसे अनोखी हैं। कुछ विरल मूर्तियाँ भी यहाँ देखने को मिलती हैं। सुचारु रूप से अलंकृत परन्तु लावण्यमय तथा सुन्दर और कमलांकित प्रभामंडल व मुक्ताशोभित मूर्तियों में पूर्वकालीन गुप्तकला की छाप नज़र आती है। नक़ाशी के इन कामों में मध्य-भारत तथा उत्तर-प्रदेश में काफी सादृश्य है। देवताओं की छाती पर चतुर्भुज आकार का जो चिन्ह पाया जाता है, वह इन दोनों शाखाओं की सामान्य विशेषता है। खजुराहो मन्दिर में खुदाई के कामों में मूर्तियों की स्थिति व सजावट की सूक्ष्मता दर्शकों को आकृष्ट करती है। यहाँ की प्रेम-संबंधी मूर्तियाँ पुरी व भुवनेश्वर की वैसी मूर्तियों से काफ़ी सामंजस्य रखती हैं। ललितपुर मन्दिर के त्रिविक्रम की सुन्दर मूर्ति तथा भेराघाट की योगिनियों की मूर्तियाँ मध्य-भारत की पूर्वकालीन कला के अमूल्य निदर्शन हैं एवं खजुराहो की नक़ाशी के काम उत्तरकालीन मध्यभारत की कला का साक्ष्य देते हैं। मध्ययुगीन मध्यभारत की कला में जैन-तीर्थंकरों की दो मूर्तियाँ उल्लेखनीय हैं; इनके अलावा सटना की योगिनियों एवं खुदाई के अनोखे काम के साथ नाग-नागिन की आलिंगन-बद्ध मूर्ति चित्ताकर्षक है।

ऐहोल, बादामी व पट्टडकल से प्राप्त पूर्व-मध्यकालीन मूर्तिकला पहले युग की गुप्त-परम्परा की याद दिलाती है। बादामी की मूर्तियाँ कुछ क्लिष्ट हैं; परन्तु पट्टडकल की मूर्तियों में लावण्य झलकता है। इलोर के राष्ट्रकूट इलाके में चालुक्य कला की प्रधानता थी और यहाँ के कैलाश मन्दिर की नक़ाशी के कामों में मूर्तिकला का उन्नत रूप नज़र आता है। कन्नड़ ज़िलों में चालुक्य मूर्तिकला का जो विकास हुआ था; वह इस शाखा से प्रभावित है। हेमवती, मैसूर व पूर्वी हैदराबाद के यथाक्रम नोलम्ब, होयसल व काकतीय शाखाओं में चालूक्य की स्थानीय मूर्ति-कला का प्रसार हुआ था। होयसल व काकतीय कला मैसूर व बरंगल के हेलबीड व बेलूर एवं हैदराबाद के पालमपेट की दीवारगीर मूर्तियों में स्पष्ट देखने को मिलती है। होयसल मूर्तिकला की अलंकृत खुदाई का काम बेजोड़ है और इस शाखा में नक़ाशी का काम ही ख़ास गुण है। (चि० ७ ए) इसी प्रकोष्ठ में दक्षिण-भारत तथा दाक्षिणात्य की चालुक्य व होयसल कला के उत्तर काल की मूर्तियाँ प्रदर्शित की गई हैं; अधुना मैसूर राज्य से जो मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं वे दाक्षिणात्य कला से पूर्ण परिचय करा देती हैं।

ईसवी शती से ही जावा में भारतीय आबादी की सूचना मिलती है और लगभग पाँचवीं शती में हिन्दू राजा पूर्णवर्मन की पल्लव-लिपि में खोदित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संस्कृत शिलालेखों से पता चलता है कि उसी समय से भारतीय प्रायद्वीप से जावा द्वीप का गहरा सम्बन्ध था। ग्यारहवीं शती में मध्य-जावा में जो कीर्त्ति-स्तम्भ मिलते हैं उन पर दक्षिण भारत का गहरा प्रभाव नज़र आता है। कम्बोडिया से काँसे की पूर्वकालीन जो मूर्तियाँ मिली हैं उनसे अमरावती की बुद्ध-मूर्तियों का यथेष्ट मेल है। नागपटनम् में काँसे की कुछ पूर्वकालीन मूर्तियों में भी जावा-कला का प्रभाव पाया जाता है। नालन्दा की मागधी-कला, दक्षिण पल्लव व चोल कला एवं जावा कला से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि जावा व इन दोनों इलाकों में सांस्कृतिक सम्बन्ध था। पूर्व मध्य-युगीन जावा कला में गुप्त व पल्लव आकृतियों की तुलना परिलक्षित होती है। दिएंग के समस्थल से ये पूर्वकालीन मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। चंडी कलसन व चंडी सेबु नामक दोनों सुशोभित मन्दिर ८–९वीं सदी के शैलेन्द्र काल में गिने जाते हैं। केडु समतल भूमि पर स्थित चंडी बरबुदुर है जिसका आकार वेदिकायुक्त सूची-स्तम्भ का है और जिसके शीर्ष देश के मध्य-भाग में एक स्तूप नज़र आता है एवं एक केन्द्रीय वृत्त में बहत्तर छोटे-छोटे स्तूप चारों ओर घेरे हुए हैं; चबूतरों के परिभ्रमण-सम्बन्धी मार्गों की दीवारों को, जिनमें बुद्ध के जीवन तथा अवदानों के दृश्य उत्कीर्ण किये गये हैं, मूर्तिकला का सुन्दर प्रकोष्ट जैसे मालूम होता है। प्रभबानन में चंडी लोरो जोंगरंग एक विशाल हिन्दू कीर्त्ति-स्तम्भ है एवं मन्दिर के चबूतरे की वेदिका में रामायण तथा कृष्णायन की गाथाओं के चित्र खोदे गये हैं।

अंकोर टॉम के विशाल बाँधों से कम्बोडिया की खमेर कला का परिचय मिलता है जिसमें नाग मुडेर को धारण किये हुए देव व असुर, तीन तोरण, गरुड़ पुतलिका, मनुष्य के मुखौटेवाले ऊँचे मीनार खोदे गये हैं एवं प्रकोष्ठों के चारों ओर पुराण-कथाएँ उत्कीर्ण हैं जिन्हें देखकर ऐसा मालूम होता है कि किसी कुशल शिल्पी द्वारा दीवार-गात्र पर चित्र अंकित किये गये हों। कम्बोडिया-कला में जो भाव निखर आता है वह मध्य जावा की कला के उत्तरकाल का है और जिसकी मूर्तियों के लावण्य से इस भाव की तुलना करनी चाहिए। जावा की मूर्तिकला (चि० ७ बी०) के कई सुन्दर निदर्शन, कम्बोडिया कला के गरूड़ की एक सुन्दर मूर्ति (चि० ७ सी०) एवं कुछ अन्यान्य वस्तुएँ इस प्रकोष्ठ में प्रदर्शित की गई हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दक्षिणी बरामदा

बिहार व उड़ीसा से प्राप्त मध्ययुगीन मूर्तिकला

गुप्त-प्रकोष्ठ के पास के दक्षिणी बरामदे में उड़ीसा व बिहार की मध्य-युगीन मूर्तिकला का कुछ संग्रह प्रदर्शित है। उड़ीसा कला में ललितगिरि से प्राप्त बोधिसत्व, तारा, कोणार्क के सूर्य की टूटी हुई मूर्ति, भुवनेश्वर के भैरव प्रधान हैं।

पूर्वी व पश्चिमी बरामदे

स्थापत्य के कुछ टुकड़े

पूर्वी बरामदे में बिहार, उड़ीसा व उत्तर-प्रदेश के स्थापत्य-कला के कुछ टुकड़े रखे गये हैं। मकर-शोभित परनाले, अलंकृत दरवाज़े, नवग्रह व दशा-वतार की आकृति खोदित दरवाज़े के ऊपर के भरेठे, हाथियों की चित्रवल्लरी, मन्दिरों के निचले भाग, खम्भे तथा चौकोर खम्भे के घोड़े व अन्यान्य जान-वरों की आकृतियाँ इन टुकड़ों में से दर्शनीय हैं। बंगाल से प्राप्त एक सुन्दर भरेठे पर अपनी शक्तियों के साथ ब्रह्मा की मूर्ति नज़र आती है; इसे देख-कर ऐसा प्रतीत होता है कि यह इसी देवता के किसी मन्दिर का भाग रहा होगा; भारत में ब्रह्मा का मन्दिर प्रायः न के बराबर है। बंगाल से मकर-शोभित एक परनाला नक़ाशी का अद्भुत कामवाला एक स्तम्भ जो संभवतः बंगाल का है, नाग-रक्षकों के साथ गुप्तकालीन एक तोरण एवं उत्कृष्ट खुदाई के कुछ और काम इस स्थान की आकर्षक वस्तुएँ हैं।

स्थापत्य-कला के इसी प्रकार के कामों की भाँति पश्चिमी बरामदे में दो स्तम्भ दिखाई पड़ते हैं जिनपर गायकों की मूर्तियाँ खोदी गई हैं; इनके अलावा भारहुत की कुछ सामग्रियाँ भी इस स्थान में दर्शनीय हैं।

दूसरी मंजिल के बरामदे

भारतीय मूर्ति कला व लिपि का विकास-क्रम दिखाते हुए प्रकोष्ठ

ऊपर के बरामदे में दो प्रकोष्ठ सजाए गयें हैं जिनमें से एक में कुछ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चुनी हुई मूर्तियों के सहारे मूर्तिकला का विकास-क्रम दिखलाने का प्रयत्न किया गया है। यहाँ असली मूर्तियों के स्थान पर उनके साँचे तथा चित्र रखे गये हैं और नक्शे के नीचे की लेबिल में इनकी व्याख्या भी दी गई है; स्थान व काल को निर्देश करते हुए विभिन्न रंगों में अपने स्थानों पर देवताओं की विभिन्न मूर्तियाँ रखी गई हैं जिससे मूर्तिकला का काल-निर्णय किया जा सके। इसके बाद जो कोष्ठक रखा गया है उसमें ब्राह्मी जैसी पुर्वकालीन लिपि तथा नागरी, बंगला, तामिल-ग्रंथ, तेलगु, कन्नड़ आदि उत्तरकालीन लिपियों का विकास दिखाया गया है एवं इसके पास एक मानचित्र है जिसमें उन स्थानों का उल्लेख किया गया है जहाँ इन लिपियों का प्रचलन है। भारत के बाहर सुदूर देशों में इन लिपियों का विकास हुआ था और भारतीय लिपियों की पहुँच जिन स्थानों तक थी उन स्थानों को दिखाते हुए एक कोष्ठक भी यहाँ प्रदर्शित है।

मूर्तिकला पर समय व काल अपनी विशेषताएँ छोड़ जाते हैं। इस दिलचस्प विषय के अध्ययन के लिए कई विशेष निदर्शन यहाँ प्रदर्शित किये गये हैं। विभिन्न ऐतिहासिक कालों तथा विभिन्न स्थानों में एक ही प्रकार की मूर्तियों में यद्यपि सामंजस्य है फिर भी उनमें अन्तर का भी काफ़ी लक्षण देखने को मिलता है जो कि इन मूर्तियों का भेद बता देते हैं।

गणेश

गुप्त तथा पूर्वमध्यकाल में गणेश कोई मुकुट नहीं पहनते थे। पूर्वी रचनाओं में उनके दो हाथ और हाथी का मस्तक उनकी मूर्ति के स्वाभाविक लक्षण थे। परन्तु उत्तर-प्रदेश, बिहार, बंगाल व उड़ीसा की उत्तरी मध्ययुगीन मूर्तिकला में गणेश जटामुकुट पहनते हैं और एक कटोरे से मोदक खाते हैं। उड़ीसा के कहीं-कहीं जटामुकुट के बदले में घुंघराले बाल नज़र आते हैं। दक्षिण भारतीय तामिल-कला की मध्ययुगीन मूर्तियों में यह देवता कटोरों के ढेर की भाँति करंड मुकुट पहनते हैं, उनकी सूंड़ पेट तक झुक जाती है फिर कुछ घूम कर अपने बाँये हाथ से मोदक की एक टिकिया को छूना चाहती है। कन्नड़ प्रान्त तथा दाशिणात्य में मुकुट रत्नजटित होता है और उत्तरी-भारत की तरह उनकी सूँड़ पात्र से मोदक उठाने के लिए सीधे पहुँच जाती है।

सूर्य

ईसवी की पहली शती में सूर्य साफा पहनते हैं और एक चार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घोड़े वाले रथ पर चढ़ कर जाते हैं। गुप्त-कला में मुकुट पहने, तलवार लिये, सेवक दंड व पिंगल के साथ कोट व जूते पहने हुए मिलते हैं। मध्य-युगीय उत्तर-भारतीय कला में राजस्थान से बंगाल व उड़ीसा तक उनका वही वेष नज़र आता है, परन्तु जिस रथ पर चढ़े जाते हैं उसे सात घोड़े खींचते हैं। दक्षिण भारत की मूर्तियों में सूर्य बिना कोट के व नंगे पैर के होते हैं और ज़्यादातर सेवक वृन्द ग़ायब रहते हैं। दाक्षिणात्य की चालुक्य मूर्तिकला में सूर्य को अनुचरों के साथ उत्तर भारतीय ढंग से दिखाया गया है, इसके अलावा दोनों पार्श्वदेश में दो वीरांगनाएँ तीर-धनु लिये खड़ी रहती हैं।

ब्रह्मा

गुप्तकाल में ब्रह्मा को नवयुवक के रूप में दिखलाया गया है जहाँ उत्तरी-भारत की मध्ययुगीन कला में उन्हें दाढ़ी दी गई है और साथ-साथ मोटा पेट भी दिया गया है जिससे उनका पितामह नाम अर्थात् देवताओं के पितामह का नाम सार्थक हो। बंगाल में वह कभी दाढ़ी के साथ तो कभी बिना दाढ़ी के दिखलाये गये हैं परन्तु पेट के आकार का महत्व दिया गया है। दक्षिणी-चालुक्य प्रान्त में उत्तरी-भारत का ही ढंग अपनाया गया है। लेकिन दक्षिण के तामिड़ इलाके में ब्रह्मा को दूसरे किसी भी देवता की भाँति सुन्दर तथा युवक दिखलाया गया है। कपड़े या हिरन के चमड़े से बने वस्त्र एवं 'आजिन यज्ञोपवीत' का ब्रह्मा के लिए व्यवहार किया गया है।

विष्णु

भारत के सभी स्थानों में विष्णु के चौबीस रूप मालूम हैं परन्तु उत्तर-भारत में त्रिविक्रम एवं दक्षिण-भारत में वासुदेव सबसे लोकप्रिय हैं। गुप्तयुग में साधारणतः आयुध-पुरुषों अर्थात् शस्त्रों के मानवीकरण के साथ विष्णु की मूर्ति पाई जाती है यद्यपि उत्तरकाल में आयुधों को अपने अपने रूप में दिखाना ही ज्यादा प्रचलित हुआ। पूर्वी-मध्ययुग के कुछ पहिले बंगाल तथा बिहार में आयुध-पुरुषों को, ख़ास कर चक्र और गदा को, दिखाना ज़ारी रहा एवं ये ही रूप दाक्षिणात्य व दक्षिण में चालुक्य व पल्लव मूर्तिकला में भी क़ायम रहा। उत्तर-भारतीय मूर्ति-कला में वनमाला विष्णु की मूर्ति का एक आवश्यक तथा विशिष्ट अंग है।

विष्णु की मूर्ति में श्रीवत्स-चिह्न पाया जाता है परन्तु उत्तर भारत से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दक्षिण भारत में इसका ज़्यादा प्रचलन है एवं गुप्तकला में कभी-कभी इसका प्रयोग होने पर भी उत्तर-पूर्वी मध्ययुगीन मूर्तियों में यह कहीं भी नज़र नहीं आता। समय व स्थान के अनुसार श्रीवत्स-चिह्न विभिन्न प्रकार के होते हैं और उत्तरी भारत में छाती के मध्य-भाग में एवं दक्षिणी भारत में छाती की बाईं ओर यह चिह्न रहता है। विष्णु विभिन्न आकार तथा सजावट के शस्त्र हाथ में लिए हुए रहते हैं; यह विभिन्नता स्थानों के भेदानुसार पूर्वी-युगीन मूर्तिकला की भाँति या तो स्वाभाविक रूप से आ गई है या उत्तर के 'खटकामुख' और दक्षिण व दाक्षिणात्य के 'कर्तरी-मुख' हस्त में मूर्तियों का निर्माण हुआ है। बौद्ध प्रभाव के कारण पूर्वी बंगाल में वह कभी-कभी कमल के आधार पर रखे हुए शस्त्र धारण करते हैं। दक्षिण भारत में वह श्री और भू देवी के साथ रहते है परन्तु उत्तर भारत में श्री और सरस्वती उनके साथ रहती हैं।

विष्णु के रूपों के तीन मुख्य भेद होते हैं--स्थान, आसन एवं शयन मूर्तियाँ। इन तीनों भेद में स्वाभाविक विभिन्नताएँ व सादृश्य मालूम पड़ते हैं परन्तु शयन-मूर्ति में दक्षिण व उत्तर भारत में एक खास विभिन्नता नज़र आती है। शेषनाग की देह द्वारा जो चक्करदार पलंग बनाया गया है वह उत्तर भारत में कुछ मोड़ा हुआ नज़र आता है जहाँ दक्षिण भारत की पूर्वीकालीन मूर्तियों में वह कमानीदार गद्दा जैसा है और उत्तरकाल में विष्णु की देह पूरी लम्बाई में उसपर आधारित रहती है।

दशावतार

दशावतार या विष्णु के अवतारों को दिखाना उत्तरी भारत में ज़्यादा लोकप्रिय है और दीवार के भाग में ये दस रूप एक पंक्ति में खोदे गये हैं। चालुक्य मूर्तिकला में यही परम्परा मौजूद है जहाँ विष्णु-मूर्ति के पीछे व पत्ते के आकार वाले शीर्षभाग में दशावतार की मूर्तियाँ खोदी हुई मिलती हैं।

बराह

विष्णु के बराह-अवतार दो प्रकार से दिखाये गये हैं--केवल बराह के रूप में और मनुष्याकार परन्तु बराह का मस्तक। उत्तर-भारत की मूर्तिकला में ये दोनों रूप ही पाये जाते हैं जैसे इरान से प्राप्त पूर्व-गुप्त काल के बराह, मध्य-भारत के उदयगिरि गुफे में तथा उत्तरकालीन मूर्तिकला में बराह। परन्तु दक्षिण भारत में केवल उपरोक्त रूप ही मिलता है, पशु की आकृति दिखलाने वाला रूप नहीं मिलता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिव

उत्तर-भारतीय मूर्तिकला में शिव को शूल, अक्षमाला व साँप के साथ दिखाया गया है लेकिन दक्षिण भारत में वह परशु व हिरन लेते हैं। दक्षिण भारत की कला में वह हमेशा मकर व पत्र-कुंडलों के साथ नज़र आते हैं। उत्तरी कला में कभी-कभी शिव के दो हाथ दिखाई देते हैं परन्तु गुड़ी-मल्लाम की पूर्वकालीन मूर्तियों में ही केवल यह विशेषता पाई जाती है।

शिव व पार्वती

शिव जब पार्वती के साथ रहते हैं तो वह उमामहेश्वर कहलाते है और उत्तर-भारत में यह रूप बहुत ही प्रिय है लेकिन दक्षिण में सोमस्कन्द का रूप ज़्यादा प्रिय है। उत्तर-भारत की हर-गौरी की मूर्ति में शिव को सर्वदा बैठा हुआ व पार्वती को प्यार करने की अदा में पाया जाता है परन्तु दक्षिण-भारत की सोमस्कन्द मूर्ति में वह अपने परिवार-वर्ग के साथ स्कन्द को बीच में लेकर रहते हैं। उत्तर-पूर्वी भारत की कला में शिव अलंकृत ऊर्द्ध रेत परन्तु नंगे दिखाई देते हैं, ऐसी मूर्ति दक्षिण भारत में कहीं भी नहीं नज़र आती। उत्तर-भारत की मध्ययुगीन कला में शिव के दो हाथ होते हैं परन्तु दक्षिण-भारत में केवल गुडीमल्लम की मूर्ति में यह विशेषता पायी जाती है।

भैरव-गजान्तक-अंधकान्तक

उत्तर-भारत की कला में गजान्तक, भैरव व अंधकान्तक के दो या तीन रूपों को एक साथ शिव की मूर्ति में प्रगट किया गया है जहाँ दक्षिण-भारत में इनकी अलग-अलग मूर्तियाँ बनी हैं और अपनी निजी विशेषताएँ रखी गई हैं। इलोर की तरह दाक्षिणात्म के चालुक्य इलाके में इन तीनों की मिली हुई मूर्ति पाई जाती हैं।

नटेश

नटेश के रूप में शिवजी के अनेक हाथ होते हैं और उड़ीसा-कला में शिव नन्दी को पास में लेकर ललित या चतुर ढंग से नाचते हैं। पूर्वी बंगाल की कला में वह अनेक हाथ के हैं और साँड़ पर चढ़ कर नाचते हैं। उत्तर प्रदेश और मध्य-भारत में उनके अनेक हाथ हैं परन्तु उड़ीसा की भाँति साँड़ पास में बैठा हुआ रहता है। दक्षिण भारत में वह चार हाथ के हैं और एक बौने पर आनन्द-तांडव ढंग से नाचते हैं। उत्तर भारत में नटेश व वीनाधार दोनों रूपों की मिली हुई मूर्ति भी नज़र आती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कल्याण सुन्दर

कल्याण सुन्दर अर्थात् शिवजी पार्वती से विवाह कर रहे हैं, तीन भेदों में दिखाया गया है। शिवजी के पास पार्वती को अपर्ण किया जा रहा है--यह इस मूर्ति का साधारण रूप है। एलिफेंटा जैसी पूर्वीकालीन कला में हिमावन पार्वती को सम्प्रदान कर रहे हैं और मदुराई के मन्दिर की जैसी उत्तरकालीन कला में विष्णुजी पार्वती को सम्प्रदान करते हैं। दोनों ही पाणिग्रहण के रूप हैं। बंगाल में सप्तपदी का उल्लेख मिलता है, होमाग्नि को साक्षी मान कर शिव के सामने पार्वती उनके जीवन-साथिन के रूप में खड़ी रहती हैं।

अर्धनारीश्वर

अर्द्धनारीश्वर के रूप में साधारणतः शिवजी के ज़्यादातर चार, कभी-कभी तीन, हाथ होते हैं। इस पुस्तिका में जिस अर्द्धनारीश्वर का चित्र दिया गया है उनके अनेक हाथ हैं जो कुछ अस्वाभाविक-सा जान पड़ता है। तामिड़ इलाके म पूर्वकालीन पल्लव कला में स्वाभाविक रूप व परिस्थिति में एवं चार हाथ वाली मूर्ति का निर्माण हुआ है परन्तु चोल मूर्तिकला के पहले भाग में शिवजी के दो हाथ और पार्वतीजी के एक ही हाथ का आधा अंश नज़र आता है; त्रिभंग के घुमाव के साथ बड़े सुन्दर ढंग के साथ इस कला की मूर्तियों की रचना हुई है। उत्तरकाल में फिर इनके चार हाथ दिखाये गये हैं परन्तु स्त्री व पुरुष की शरीर रचना की ओर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया गया है। उड़ीसा से एकपाद की एक मूर्ति प्राप्त हुई है जो उत्तर व दक्षिण भारत में विरले ही देखने को मिलती है।

सप्तमातृका व नवग्रह

कुशान मूर्तिकला में एक बच्चा लिए हुए चामुंडा व बाराही के साथ सप्तमातृका या सात माताओं की मूर्तियाँ प्रदर्शित की गई हैं एवं पूर्व-मध्य-कालीन कला में भी इसी रूप का प्रचलन ज़ारी रहा। परन्तु उत्तरकाल में उत्तर व दक्षिण भारत में बाराही को बराह के मस्तक के साथ एवं चामुंडा को कृशकाय दिखाया गया है। दाक्षिणात्य में दक्षिण-भारतीय तामिड़ मूर्तिकला में नरमुंडमाला, सर्पिल सीमाबन्द, अग्नि की जाला रूपी बालों को छोड़ कर इनका स्वाभाविक रूप ही मिलता है।

दक्षिण-भारत में विभिन्न स्थितियों में रखकर एवं प्रत्येक मूर्ति को चार हाथ देकर नवग्रह की मूर्तियों का निर्माण किया गया है। उत्तर भारत में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इन्हें एक ही पंक्ति में दिखाया जाता है और प्रत्येक मूर्ति के दो हाथ होते हैं; राहु की आकृति कुछ बड़ी-सी होती है क्योंकि चाँद के हड़प लेने के कारण इनके केवल मस्तक व दो हाथ दिखाये जाते हैं।

तीर्थंकर

पूर्वकालीन कुशान-कला में छाती पर श्रीवत्स चिह्न जैसे महापुरुषलक्षणों के साथ तीर्थंकरों को दिखाया गया है। बाद में छाती के चिह्न के आकार का परिवर्तन हुआ। परन्तु बंगाल को छोड़ कर उत्तरी भारत के सभी स्थानों की मध्यकालीन मूर्तिकला में यह विद्यमान था। दक्षिण भारत में तीर्थंकरों की छाती पर यह चिह्न नहीं पाया जाता, केवल विष्णु की छाती पर यह दूसरे रूप में अंकित किया जाता था।

बुद्ध

इन्हीं शताब्दियों के बीच बुद्ध के उष्णीषों में भी परिवर्तन आया। लहराते हुए बालों को मस्तक पर एक गाँठ में बाँधना गांधार-कला का साधारण ढंग था। पूर्वकालीन देशी कुशान कला में मस्तक प्रायः मुड़ा हुआ रहता था, बालों की एक क्षीण रेखा कपाल के ऊपर अथवा बालों को घंघरा कर एक गुत्थे में सँवारा जाता था। गुप्तकाल में सुन्दर घुंघराए बालों का गुच्छा बनाकर चोटी बनवाई जाती थी। मध्ययुगीन कला में खासकर दक्षिण भारत में, चोटी पर से निकलती हुई आग देखने को मिलती है।

इस कक्ष से दर्शक ऐसे एक स्थान पर आ पहुँचते हैं जहाँ भारत तथा विदेशों में भारतीय लिपियों का विकास-क्रम दिखाया गया है।

विदेशों में भारतीय लिपि

पहले प्रकोष्ठ में भारत, मलाया, तिब्बत आदि स्थानों से प्राप्त शिलालेखों के नमूने मिलते हैं और विभिन्न स्थानों की मुहरों से पता चलता है कि विभिन्न समय में तिब्बत, बर्मा, लंका, मलाया, अन्नम, जावा आदि स्थानों पर भारतीय लिपियों का प्रभाव आ पड़ा था।

मध्य-एशिया तथा तिब्बत की हस्तलिपि व लेख, जो बालू के नीचे गाड़े हुए थे, की लिपियों का उत्तरकाल की गुप्त-लिपियों से विकास होने के कारण उनसे काफ़ी मेल पाया जाता है। तिब्बती-लिपि गुप्त-लिपि का ही दुर्बल रूप है। बर्मा की पाँचवीं सदी की लिपि कृष्णाघाटी की लिपि से बहुत मिलती-जुलती है। सातवीं सदी में भी वहाँ की लिपि में भारतीय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विशेषता नज़र आती है। लंकाद्वीप की पूर्वकालीन लिपि तामिड़ इलाके के गुफे की भारतीय ब्राह्मी लिपि से गहरा संबंध रखती है। लंका के दसवीं सदी के शिलालेखों पर ग्रंथ व भट्टेलुट्टु लिपियों का प्रभाव स्पष्ट मालूम होता है। कम्बोडिया व अन्नम के पहले युग की लिपि ब्राह्मी थी जिसकी आकृति आठवीं सदी की कृष्णा-घाटी तथा पल्लवों की लिपि जैसी थी। पाँचवीं शती के मलाया से प्राप्त शिलालेख भारतीय प्राचीन शिलालेख का ही पूर्ण रूप था। लगभग पाँच या छठी शती के जावा व बोर्निओ की लिपि उस समय की पल्लव लिपि से मिलती है।

ब्राह्मी

दूसरे प्रकोष्ठ में चुने हुए उदाहरण व एक बड़ी-सी चार्ट के ज़रिए पहले युग से पाँचवीं शती तक की ब्राह्मी लिपि का विकास-क्रम दिखाया गया है।

भारत में सबसे पहले युग की लिपि का परिचय मोहन-जो-दारो की मुहरों के विशिष्ट प्रतीकों से पाया जाता है जिनका अब तक सुनिश्चित स्पष्टीकरण नहीं हुआ है। भारत में ऐतिहासिक काल के आरंभ से इस देश के चारों ओर ब्राह्मी लिपि का फैलाव था। भारतीय संस्कृति की मूलगत एकता का परिचय अशोककालीन शिलालेखों से मिल जाता है जब कि एक सामान्य लिपि का व्यवहार सभी स्थानों में किया गया था। कृष्णा-घाटी की भट्टीप्रोलु की तथा सुदूर दक्षिण के तामिड़ गुफों के शिलालेखों से कुछ स्थानीय खास व्यतिक्रम भी नज़र आता है एवं इसी प्रकार उत्तर-भारत में भी शुंग, कलिंग व कुशान तथा दाक्षिणात्य व दक्षिण-भारत में सातवाहन व इक्षाकु शिलालेखों की लिपि के विकास-क्रम का पूरा बोध होता है। इक्षाकु शिलालेखों के अक्षर कुछ लम्बे-से और अलंकृत नज़र आते हैं। पूर्वकालीन पल्लवों की प्राकृत भाषा के शासन-पत्रों से, जो कुछ बाद के समझे जाते हैं, दक्षिण भारत के लिपियों के आगे की उन्नति का परिचय मिलता है जब उत्तर भारत में समुद्रगुप्त के विख्यात इलाहाबाद शिलालेख से मालूम होता है कि इस इलाके की लिपि पूर्वकालीन कुशान-लिपि का उन्नत रूप है। उत्तर-भारत की गुप्त-लिपि व मध्य तथा पश्चिमी भारत की गुप्त-लिपि में कुछ अन्तर-सा नज़र आता है और ईरान की शिलालेख के अक्षर सन्दूक के ऊपरी भाग जैसी शक्ल के हैं और इसमें कोई सन्देह नहीं कि मध्य-भारत की वाकाटक-लिपि इसीका ही पूर्ण-विकास मात्र है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नागरी

इसके बाद नागरी लिपि का प्रकोष्ठ है जहाँ पूर्वकालीन ब्राह्मी से नागरी-लिपि का विकास-क्रम व उत्तर तथा दक्षिण भारत में उसके प्रयोग को दिखाया गया है; दक्षिण भारत का लिपि-विकास जिस अंश में प्रदर्शित है उसी अंश में दक्षिण भारत की स्थानीय लिपि का क्रम-विकास भी एक ही साथ दिखाया गया है।

उत्तर-भारत में अशोक कालीन जो विविध लिपियाँ पाई गई हैं उनमें से शुंग लिपि के तथा मथुरा के पूर्वीकालीन जो शिलालेख मिलते हैं उनसे कुशान-लिपि के कुल का परिचय मिल जाता है। समकालीन क्षत्रप व सातवाहन अक्षरों से विभिन्नता रखते हुए कुशान अक्षर उत्तर-भारत की गुप्त-लिपि के पहले रूप माने जाते हैं और समुद्रगुप्त का इलाहाबादी शिलालेख इस मिश्रण का उत्कृष्ट उदाहरण है। छठी शती की यशोधर्मन-प्रशस्ति की 'कुटिल' लिपि से नागरी लिपि का जन्म हुआ। हर्षवर्द्धन के शिलालेख के नागरी अक्षरों में नागरी लिपि के उत्तरकालीन विकास की सूचना मिलती है। इस समय के अनन्तर केवल उत्तर-भारत में नागरी लिपि का प्रयोग होने लगा परन्तु दक्षिण में भी स्थानीय लिपियों के साथ इसका व्यवहार होता रहा। उत्तर दिशा में मध्य तथा पश्चिमी भारत के प्रतिहार, गर्हदवाल, परमार व चन्देल तथा बंगाल के (इस पर अलग ज़िक्र किया गया है) पाल व सेनवंश के शिलालेखों में नागरी-लिपि का उन्नति-क्रम ज़ारी रहा। दक्षिण-भारत में पल्लव तथा चालुक्य राजाओं के प्रासंगिक नागरी शिलालेखों में, राष्ट्रकूट नागरी में, जो प्रायः बहुधा निकाली जाती थी तथा यथाक्रम से निकाली गई नागरी यादव शिलालेखों में (जिसका पूर्णरूप विजय नगर शिलालेख में मिलता है) नागरी-लिपि का विकास-क्रम देखने को मिलता है। विजयनगर के ताम्र-शासन पत्र ज्यादातर घसीटी हुई एक प्रकार की नागरी में मिलते हैं जो नन्दी-नागरी लिपि कहलाती है और जो महाराष्ट्र के इलाके में प्रचलित देवनागरी लिपि से बहुत मिलती-जुलती है।

बंगला

इसी प्रकार नकशे, चित्र व देवपाड़ा के उत्कीर्ण शिला-फलक के मूल के ज़रिए आधुनिक बंगला-लिपि की विभिन्न स्थितियों को दिखाते हुए बंगला-लिपि के विकास-क्रम का परिचय मिल जाता है।

उत्तर-भारत की अशोक कालीन घोषणाओं की लिपियाँ ही भारत में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
सबसे पहले युग की मानी जाती है और इनसे ही उत्तर-काल के शुंग व कुशान शिलालेखों की लिपियों का जन्म हुआ। समुद्रगुप्त के इलाहाबादी शिलालेख में उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी भारत में प्रचलित लिपियों का परिचय मिलता है। छठी शती में उत्तर-प्रदेश तथा पूर्वी भारत में कौन-सी लिपियाँ प्रचलित थीं इसका पता मौखरी शिलालेखों से मिल जाता है और शशांक के ताम्र-पत्रों से पूर्वी भारत में प्रचलित लिपियों का बोध होता है। धर्मपाल के शिलालेखों के एक में से पाल-युग की लिपि की पहली स्थिति तथा दसवीं शती के लेखों से उसकी उत्तरकालीन स्थिति को मालूम किया जा सकता है।

विजयसेन का देवपाड़ा शिलालेख बंगला लिपि का सबसे पहला मूलरूप है और इसके बाद का विकास लक्षण सेन के लेखों से स्पष्ट हो जाता है। बंगीय साहित्य परिषद् के हस्तलेख संग्रह से चंडीदास कृत कृष्ण-कीर्तन नामक सोलहवीं शती की हस्तलिपि से बंगला की आधुनिक लिपि के चरम-विकास की स्थिति की उपलब्धि हो जाती है।

ग्रंथ-तामिल

मानचित्र के माध्यम दक्षिण-भारत के तामिल इलाके में ग्रंथ-तामिल लिपि व उसका विकास दिखाया गया है।

ब्रह्मगिरि के अशोककालीन राज-घोषणाओं से ब्राह्मी के दक्षिणी रूप का परिचय मिलता है और ईसा पूर्व की पहली शतियों में समस्त इलाके में यही सामान्य लिपि थी। परन्तु स्थानीय रूपान्तर व ल़ ऴ ड़ जैसे अधिक अक्षर तथा ऩ के एक विशेष रूप का तिरुचिरपल्ली, मदुराई व तिरुनेवेली ज़िलों के तामिल गुफों के पहले पहल के शिलालेखों में व्यवहार किया गया है। आदिकाल के पल्लव शिलालेखों में ब्राह्मी लिपियों के विशेष रूप नज़र आते हैं और इन्हीं का क्रम-विकास ग्रंथ-तामिल में परिणत हुआ जिनसे संस्कृत अक्षर एवं अनुच्छेदों तथा अभी-अभी ग्रहीत तामिल अक्षरों को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त अक्षरों की आवश्यकता हुई। सातवीं शती के पल्लवराज परमेश्वरवर्मन के 'कूरम' शासन-पत्र में ये दोनों लिपियाँ नज़र आती हैं। पूर्वयुगीन पांड्य व चोल, उत्तरकालीन पांड्य व चोल एवं विजयनगर की लिपियों में से ग्रंथ व तामिल की क्रमबद्ध उन्नति की धारणा की जा सकती है। विजयनगर काल के बाद इसका और ज़्यादा प्रसार नहीं हुआ और विजयनगर से प्राप्त लेखों से तुलना करने से आधुनिक लिपियों को समझा जा सकता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कन्नड़-तेलगु

इसी प्रकार कन्नड़ व तेलगु लिपियों का विकास आखरी प्रकोष्ठ में दिखाया गया है।

ब्रह्मगिरि व एडगुडि की अशोककालीन राज-घोषणाओं से लिपि का वह रूप निकाला है जिससे कन्नड़ व तेलगु इलाकों की लिपियों के विकास का इतिहास प्राप्त होता है। दक्षिण-भारत में पूर्वी घाटी से पश्चिमी घाटी तक सातवाहन राजाओं का राज फैला हुआ था और सारे दाक्षिणात्य में पूर्वी समुद्रतट तक एक सामान्य लिपि प्रचलित थी। कन्नड़ इलाके में कदम्ब के निवासी एक प्रकार की लिपि का व्यवहार करते थे जो वाकाटक-लिपि की भाँति सन्दूक के ऊपरी-भाग-सी शक्ल की परन्तु अलंकृत होती थी। पूर्व-युगीन पश्चिमी चालुक्य, राष्ट्रकूट तथा पश्चिमी चालुक्य-लिपियों में कन्नड़ इलाके का लिपि-विकास ज़ारी रहा जो उत्तरकाल में आलंकारिक होयसल-लिपि में परिवर्तित हुई और जिससे आधुनिक काल की कन्नड़ लिपि के विकास-क्रम का पूर्ण इतिहास मालूम किया जा सकता है।

तेलगु इलाके में विष्णुकुंडी की लिपि से पूर्वी चालुक्य लिपि का उद्भव हुआ और जिसका विकास पाँच शताब्दियों तक होता रहा। इसके बाद काकतीय फिर रेड्डी के आधीन तेलगु लिपि का विकास हुआ और विजयनगर काल में इसकी पूर्णता मिली जहाँ से आधुनिक तेलगु लिपि का सहज ही पता मिल जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुसलमानी कक्ष

पुरातत्व विभाग में प्राचीन मुसलमानी पदार्थों का एक अनमोल संग्रह एकत्रित किया गया है। इस संग्रह के दो मुख्य विभाग हैं--उत्तर भारत से प्राप्त मूर्तियाँ एवं बंगाल के मालदह ज़िले के गौड़ नामक स्थान के ज़्यादा रोचक पदार्थ। बंगाल से प्राप्त द्वार-स्तम्भ व दहेलियाँ, जो डोरिक व चतुर्भुज आकार की बनी हुई हैं, आधारों पर पश्चिमी दीवार से युक्त की गई हैं। उसी स्थान से प्राप्त एक मूर्ति रुचिकर अध्ययन की वस्तु है। कक्ष के मध्यभाग में एक पृथक् आधार पर दोनों तरफ़ गुलाब जैसे फूलों के आकार व होम (सोम) की आकृति सहित कामदार किनारे वाले वृत्तखंड के रूप में कम उभड़ी हुई खुदाई का काम पूरे अलंकृत रूप का एक अनोखा निदर्शन है। उपरोक्त ढाँचे में मस्जिद में स्थापित भूरे रंग के इस शिला-फलक पर महिषमर्दिनी की अधुरी मूर्ति खोदी हुई है जो कि छेनी के चिह्न से स्पष्ट प्रतीयमान होती है। गौड़ से होम व बेल-बूटों की नक्काशी के इस प्रकार और कई काम, जो इस स्थान का प्रिय ढाँचा था, इस कक्ष की दक्षिण तरफ प्रदर्शित किये गये हैं; इनके अलावा कुछ और भी काम देखने को आते हैं जो विभिन्न प्रकार के फूलों के चित्र से सजाए हुए ढाचों से बनवाये गये हैं। इस कक्ष के समस्त उत्तरी तथा पूर्वी भाग में विभिन्न तारीख व रुचि-सम्पन्न प्रायः पैंतालीस शिलालेखों का समावेश किया गया है। लोहित सागर के अफ्रीकी समुद्रतट से प्राप्त कुफिक ४३७ हि० (१०४५ ई०) के स्मरणलेख विशेष आकर्षक है। बंगाल में राज करने वाले विभिन्न वंश के राजाओं के दानरवरूप शिलालेख इस कक्ष की महत्वपूर्ण सामग्रियाँ हैं क्योंकि संग्रहालय के मुसलमानी शिलालेखों का कुल-संग्रह यहीं प्रदर्शित किया गया है जिसकी सबसे पहली तारीख ६०६ हि० (१४७९ ई०) की है और अंत की मुग़ल-राज अहमद शाह के शासन काल की है अर्थात् ११६३ हि० (१७४९-५० ई०)। इनमें से कुछ में तुग्रा की अत्यन्त दुर्बोध लेखन-पद्धति और कुछ में नक़शी व नस्तालिक पद्धति का परिचय मिलता है।

पारसिक संग्रह में कोश घाटी के कुछ स्मरण-लेख व शोक प्रकट करने वाली रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं। बंगाल के मालदह से प्राप्त ८८४ हि०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
(१४७९ ई०) के सुलतान यूसुफ शाह के समय एक मसजिद बनवाने का उल्लेख किए हुए भुरे रंग का शिला-फलक इस संग्रह में सबसे वृहदाकार है। दसवीं सदी के दो शिलालेख भी प्रदर्शित किये गये हैं जो काफ़ी रोचक हैं। इनमें से एक फिरोज़ शाह के शासन-काल में बंगाल के कालना नामक स्थान से प्राप्त हुआ है जिसकी लिपि अरबी-फारसी है एवं जिसमें एक मसजिद बनवाने का उल्लेख मिलता है, दूसरा शेरशाह के राजकाल का है व बिहार के भबुआ नामक स्थान से मिला है और जिसमें दोनों पृथक खम्भों पर फारसी व संस्कृत में एक पोखर के निचली ओर बैठ जाने का उल्लेख मिलता है।

अन्यान्य रोचक वस्तुओं में सूक्ष्म आकार से बनायी गयी क़ुरान की एक प्रतिलिपि है, जिसे एक पीतल के डिब्बे में आतशी शीशा व मुदरों के साथ रखा गया है, बहुत सम्भव इसे गले में बाँध रखने का यही तरीका अपनाया जाता था। मुग़ल-सम्राट अकबर की मुहर के साथ लैला-मजनू के मूल-ग्रंथ की जो एक दृष्टान्त युक्त प्रतिलिपि इस कक्ष में प्रदर्शित की गई है, वह उपहार के रूप में संग्रहीत हुई थी। कक्ष के मध्यभाग में शीशे के ख़ानेदार डिब्बे में प्रतिलिपि-संग्रह को सजाने के लिए हस्न्-इ-हसित की एक अलंकृत प्रतिलिपि रखी गई है। हाशिये में पारसीक टीका के साथ कुरान की प्रतिलिपि इस कक्ष की और एक चित्ताकर्षक वस्तु है।

समर्रा, मेसोपटेमिया से मिट्टी के बर्तनों के खंड, एवं पूर्वी पारस के क्वेन नामक स्थान से मिट्टी के पुराने बर्तनों के टुकड़े शीशे की एक धानी में व दूसरी एक धानी में हस्तलिपियों का संग्रह सजा कर रखे गये हैं। चमकीली रिकाबी, पारस में अवस्थित राह्गेस के खपड़ों के टुकड़े, एक चमकीला कटोरा और सुलतानपुर नामक स्थान के मीना किये हुए कई सुन्दर खपड़ों का एक मूल्यवान संग्रह इस कक्ष में प्रदर्शित किया गया है। इन वस्तुओं एवं बलूचिस्तान के मकरान तथा सीस्तान से प्राप्त मीना किये हुए मिट्टी के बर्तनों के टुकड़ों से भारत के आसपास के स्थानों में पहले युग की मुसलमानी संस्कृति का परिचय मिल जाता है।

ज्योतिष विद्या के पीतल-फलक से अथवा जिस यंत्र से समुद्र पर सूर्य व नक्षत्र की ऊँचाई को नापा जाता था और जो केवल बनारस (१०४८ हि० –१९३८ हि०) व सितहटी से नहीं सुदूर पारस के हीरट से भी मिले थे, मालूम होता है कि पूर्वी तथा मध्य-पूर्वी देशों में संस्कृति का लेन-देन था एवं सामुद्रिक क्रियाओं से लोगों को काफी रुचि थी। ईरान के सीरज़ नामक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थान से प्राप्त कुतुबनुआ भी और एक उल्लेखनीय वस्तु है। मुग़लकालीन एक कटार जिसके दस्ते पर जेड की पालिश की हुई है, एक तरवार और उसकी स्वर्ण-जटित म्यान एवं धातु-जटित म्यान के साथ एक तिब्बती तरवार भी इस कक्ष की आकर्षक वस्तुओं में से हैं।

फूल एवं रेखा के विभिन्न ढाँचे, हैदराबाद (सिन्ध) के मीना किये हुए खपड़े, और बंगाल के गौड़ व मालदह की नक़ाशी की हुई ईंटें अलंकृत साँचे के अध्ययन के नाते बहुत ही महत्वपूर्ण विषय हैं। बगदाद का मिट्टी का घड़ा जिस पर शिकार का एक दृश्य खोदा हुआ मिलता है पारसिक उद्योगकला का एक सुन्दर निदर्शन है। (चि० ८ बी.)।

युवराज दारा शिको के एक निशान के साथ ६५ फरमान, सनद आदि का संग्रह इस विभाग का एक विशेष आकर्षण है परन्तु इनमें से दो-एक को छोड़ कर सभी सिक्के-घर में संग्रहीत हैं। शाही सील-मुहरों में, जो आलमगीर (२) की है, वही सबसे उल्लेखनीय हैं जिसमें बादशाह के फरमानों से छाप ली गई है (चि० ८ ए.)।

कक्ष के बाहर ढोलपुर रियासत के तीन पारसिक खपड़े देखने को मिलते हैं क्योंकि इनमें फूलों का नक्शा एवं मनुष्य व पशु की आकृतियाँ अनोखे रूप से खोदी गई हैं। इन्हीं के पास मीना किया हुआ एक खपड़ा नज़र आता है जो सम्भवतः लाहौर या मुलतान का है (चि० ८ सी) और जिसमें फाज़िल उमर खैय्याम का एक फारसी दोहा उत्कीर्ण है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राग्-ऐतिहासिक व विविध वस्तुओं का कक्ष

इस विभाग के प्राग्-ऐतिहासिक सामग्रियों का संग्रह बहुत ही मूल्यवान है एवं साथ ही दूसरे देशों के विभिन्न स्थानों से प्राप्त आदि-ऐतिहासिक तथा ऐतिहासिक संग्रह प्रदर्शित किया गया है।

भारत तथा और देशों के विभिन्न स्थानों से प्रस्तर-युग, मध्य तथा नए प्रस्तर युगों का प्रतिनिधि संग्रह प्राग-ऐतिहासिक अनुभाग में रखा गया है। भारतीय पाषाण-युग में ज्यादातर बिल्लोर (एक प्रकार का चमकीला पत्थर), चीरने, मारने एवं खोदने के लिए औज़ारों का संग्रह जिनका अफ्रीका, युरोप व मध्य अमेरिका के इस ज़ात के औज़ारों से काफ़ी मेल है। मद्रास के पल्लव-रम में क़रीब एक शताब्दी पहले भारतीय भूगर्भ परीक्षण विभाग के स्व० र० ब्रुस-फुट ने भारत के सबसे पहले के काटनेवाले औज़ार का आविष्कार किया था। बाद में बिहार, उड़ीसा, राजस्थान, मध्य-भारत की सबरमती व नर्मदा घाटियाँ, दक्षिण-पश्चिमी काश्मीर एवं पंजाब की सोअन घाटी आदि विभिन्न स्थानों से ऐसे औज़ार प्राप्त हुए हैं। हिमालय-क्षेत्र के बरफ का चिकना होने के नाते भूगर्भ-परीक्षण के लिये १९३५ ई० में एच-द तर्रा द्वारा परिचालित येल-केम्ब्रिज अभियान ने भारत के प्राग्-इतिहास का अध्ययन करना चाहा। द्-तर्रा द्वारा सोअन तथा नर्मदा घाटियों की संस्कृति के अध्ययन के बाद भारतीय पुरातत्व विभाग व गुजराती अन्वेषण समिति ने १९४२ में इस ओर एक नया अभियान चलाया। नर्मदा घाटी के केकड़ों में नरसिंहपुर ज़िले के भुटरा व मिक स्थान में हैकेट और हैदराबाद में पैठान के पास मुंगी में ऊपर गोदावरी घाटी के केकड़ों में से वाइन ने जो दो सुन्दर हथियार निकाले वे पाषाण-युगीन गुप्त जानवरों की हड्डियों के साथ सीधा सम्बन्ध रखते हैं। जिन स्थानों से ये हथियार या औज़ार मिले हैं उनका निर्माण बहुत पहले के भूगर्भ-युग से शुरू हुआ था।

पाषाण-युगीय औज़ारों के अन्तिम काल एवं नव्य-पाषाण युग के प्रारम्भिक काल के दरम्यान भारत में एक विशष काल की परिधि थी। नव्य-पाषाण-युग के लोग पाषाण-युग के लोगों से अपने हथियारों का प्रचलन ज़्यादा दूर तक फैला सके थे। इसका कारण शायद यह था कि इनके हथियार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रस्तुत करने के लिए जिन प्रकारों के पत्थर की ज़रूरत होती थी वे इन्हीं स्थानों में प्राप्त होते थे। नव्य-पाषाण युगीय 'सेल्ट' 'ट्रैप'-पत्थर से बनाया जा सकता था और इसलिए कावेरी-भाग में जहाँ यह पत्थर मिलना मुश्किल था, इस औज़ार का कोई व्यवहार नहीं हुआ। सलेम, अनन्तपुर, कुर्णुल व बेलारी ज़िलों में, हैदराबाद, दक्षिणी गंगा की समतल-भूमि, उत्तर-प्रदेश के कुछ अंश, मध्य-प्रदेश के उत्तरी ज़िलों में, गुजरात व बम्बई के दक्षिण-भाग में नव्य-पाषाणयुगीन हथियार प्राप्त होते हैं परन्तु पंजाब, राजस्थान, सिंध व बंगाल में ये शायद ही नज़र आते हैं। नव्य-पाषाणयुगीन सेल्ट जैसे ट्रैप नामक प्रस्तर से ख़ासकर बनवाया जाता था उसी प्रकार फ्लेकर हथौड़ा आदि औज़ार ग्रेनाइट, नीस, हेमाराइट व क्वार्टज़ाइट आदि पत्थरों से बनते थे।

भारत में नव-पाषाण युग के बाद जिस ताम्र-युग का आरम्भ हुआ था उस समय के औज़ार व शस्त्र उत्तर-पश्चिम सीमान्त प्रदेश के कुर्रम से लेकर पूर्व में मिदनापुर एवं हिमालय के पाददेश से कानपुर ज़िले तक सभी स्थानों से प्राप्त हुए हैं। १८७० ई० में मध्य-प्रदेश के बालाघाट ज़िले में गुंगेरिया नामक स्थान से प्राप्त सामग्रियाँ इनमें से सबसे मूल्यवान संग्रह है। इस संग्रह में चाँदी की पतली पहियाँ व शुद्ध-धातु के बने कई ताम्र-हथौड़े हैं जिनमें २२ चपटी ताम्र-कुल्हाड़ियाँ व अन्यान्य हथियार साँड़ के मुँहवाली चाँदी की आठ पहियाँ एवं चाँदी की चार चकतियाँ एक दीवार-धानी (केस) में प्रदर्शित हैं। इनके अलावा उत्तर-प्रदेश के फर्रुखाबाद के फ़तहगढ़ से प्राप्त चार तरवार और छुरे (डैगर) एवं एक अपरिमार्जित मनुष्याकृति देखने योग्य हैं।

आर. डी. बनर्जी द्वारा सिन्ध में लकर्णा ज़िले में मोहन-जो-दारो का आविष्कार एवं इसी स्थान तथा पंजाब में मण्टगोमारी ज़िले के हरप्पा और सिंधु घाटी के दूसरे स्थानों में उत्तरवर्ती उत्खनन से भारतीय ताम्रयुग की एक नई स्थिति का उद्घाटन हुआ जो ताम्र-पाषाणिक संस्कृति कहला जा सकती है जब ताम्र व प्रस्तर दोनों प्रकार के औज़ारों का व्यवहार होने लगा था। मोहन-जो-दारो व हरप्पा के संग्रहीत पुरावशेष भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिर्देशक से ऋण के रूप में प्राप्त हुए हैं। सिंध घाटी के उत्खनन ने चार हज़ार वर्ष पहले की एक अद्भुत नगरीय सभ्यता को हमारे सामने उपस्थित किया है। शहर का खाका, चौड़े मुख्य राजमार्ग, भवनों का विन्यास जल-निकास का अनोखा प्रबन्ध विराट स्नानागार आदि उस प्रारंभिक काल की उच्च कोटि की सभ्यता का परिचय देते हैं। सचित्र आख्यानों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के साथ मुहरें, जो कि अब तक नहीं पढ़े गये हैं, एवं सठीक वजन के लिए बट्टे उन स्थानों के लोगों की तीक्ष्ण-बुद्धि का परिचय देते हैं। पकी हुई मिट्टी की छोटी-छोटी खासकर साँड़ की मूर्तियों की बनावट बहुत ही सुन्दर है एवं प्रत्येक मूर्ति प्राणमय है। (चि० ९ ए. ई. एच.)। इस काल की प्रस्तर-खुदाई की जितनी वस्तुएँ मिलती हैं वे भी दर्शनीय हैं एवं मुँह में दाढ़ी व त्रि-पत्र-अंकित ओढ़नी ओढ़े हुए पुरुष के ऊपर-धड़ की मूर्ति इस संग्रह में आकर्षक वस्तु है। सुन्दर ढंग में दुबली-पतली नटी की ब्रोंज-मूर्ति उस काल के धातु-शिल्प के चातुर्यपूर्ण कला-कौशल का प्रतीक है। मुहरों पर (चि० ९ बी. सी. डी.) सचित्र कथाओं के साथ विभिन्न साँचों की नक्काशी की गई है जो उस अतीत काल के जन-विश्वास का परिचय देती है। सींगवाला भुरेठा पहने, ऊर्द्ध-लिंग तथा हाथी, गंडार, बाघ एवं भैंस आदि जानवरों से परिवृत बैठे हुए योगी की मूर्ति योगी व पशुपति के रूप में शिवजी की मूर्ति के साथ उल्था किया गया है। एकशृंग नामक कल्पित पशु, नीचे की ओर झूकी हुई सींगवाला साँड़, बाघ से लड़ते हुए आदमी या दूसरे कल्पित पशु से घेरे हुए पेड़ों की प्रतिकृतियाँ भी इन मुहरों में पायी जाती हैं। इन मुहरों में से कुछ ऐसी हैं जिनका मेसोपटेमिया की मुहरों से बहुत मेल है और जिससे मालूम होता है कि सम्भवतः सुमेर-सभ्यता से इस सभ्यता का सम्बन्ध रहा होगा। मेसोपटेमिया के 'ऊर' एवं 'किश' नामक स्थानों के आविष्कारों से जो वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं उनसे सिंध-घाटी की प्राग्-ऐतिहासिक सभ्यता की वस्तुओं का इतना मेल नज़र आता है कि कई पंडित इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि एक सभ्यता दूसरी सभ्यता से ज़रूर प्रभावित है। परन्तु यह मानना ज़्यादा उचित होगा कि दोनों सभ्यताओं का अभ्युत्थान एक सामान्य उद्गम से हुआ था। कुछ मुहरें, ताम्र-औज़ार व मिट्टी के चित्रित बर्तन, मातृका-मूर्ति के साथ पकी मिट्टी की कई आकृतियाँ, शुक्ति के कुछ पदार्थ व चकमक पत्थर के शल्कल औज़ार व कोर, मनके व अन्यान्य वस्तुएँ दीवार तथा मध्य धानियों में प्रदर्शित की गई हैं। क्वेटा संग्रहालय से १९३६ में स्थानान्तरित बलूचिस्तान के कलाट इलाके के नाल से प्राप्त मिट्टी के चित्रित बर्तन भी दो धानियों में सजाये रखे गये हैं। प्राग्-ऐतिहासिक कब्र-स्थानों से मिट्टी के जो बर्तन पाये गये हैं उनमें भूमिति-रेखा चित्रित बर्तन मिलते हैं और वे दो से ज़्यादा रंगों में रंगे हुए हैं। इन बर्तनों में कुछ ताम्र पाषाण-युग के मालूम होते हैं फिर भी लाल पर काले रंग में चित्रित मोहन-जो-दारो के बर्तनों से इनका काफ़ी अन्तर है। दक्षिण भारत से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लौहयुगीय पुरावस्तुओं में कुर्ग के प्राग्-ऐतिहासिक कब्रों एवं मद्रास के सलेम, बेलारी, चिंगलेपट व तिरुनेलवेली से प्राप्त मिट्टी के बर्तन एवं औज़ार प्रधान हैं। चिंगलेपट के पेरुमवैर व तिरुनेलवेली के आदिचमल्लूर नामक स्थानों से कई आकर्षक वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। नीलगिरि इलाके से प्राप्त मिट्टी के बर्तन व अन्यान्य वस्तुएँ मद्रास संग्रहालय में संग्रहीत हैं। यद्यपि संग्रह की संख्या ज़्यादा नहीं है फिर भी यह प्रतिनिधि संग्रह कहला जा सकता है।

इस कक्ष के दक्षिण-भाग में जो विभिन्न वस्तुएँ प्रदर्शित की गई हैं, उनमें से उत्तर-प्रदेश के बस्ती ज़िले के वर्दपुर राज्य म पिप्रावा नामक स्थान के एक स्तूप से प्राप्त एक विशाल पत्थर की पेटी है जिसका उत्खनन १८९८ म श्री पेपी ने किया था और जिसके भीतर से प्राप्त वस्तुएँ पास ही के एक केस में प्रदर्शित की गई हैं। इनमें एक स्फटिक निर्मित कटौरा, सल्जी के बने पात्र तथा सुनहले फूलों की भाँति अन्यान्य वस्तुएँ हैं। सल्जी के पात्र में पूर्वकालीन ब्राह्मीलिपि में खुदाई एक शिलालेख है जिसमें लिखा है 'सुकृति के भाई, बहन, लड़के एवं स्त्रियों द्वारा रक्षित शाक्यों के प्रभु बुद्ध के शरीर के अवशेष रखने का पात्र'। सल्जी के पात्रस्थित झुलसी हुई अस्थियों में पुरातात्विक महत्व से धर्मीय महत्व अधिक रहने के कारण भारत सरकार ने इसे श्यामदेश के राजा को उपहार दे दिया है।

तक्षशिला व भीटा में सर जॉन मार्शल द्वारा व बुद्धगया में कनिंगहाम द्वारा उत्खोदित प्रधान-प्रधान ऐतिहासिक वस्तुएँ मध्य-धानियों में प्रदर्शित की गई हैं।

दो दीवार-धानियों में इलाहाबाद ज़िले के कोसम, चम्पारण ज़िले के नन्दनगढ़ एवं गोरखपुर ज़िले के कसिया की पुरावस्तुएँ रखी गई हैं।

बंगाल में पत्थर की कमी रहने के कारण पकी मिट्टी से चीज़ें बनाई जाती थीं और ये चीज़ें ही उस समय की प्रांतीय मूर्ति-कला के प्रतिनिधि बनी थीं; पहाड़पुर, राजशाही, महास्थान, बगुड़ा, कुमिल्ला के मयनामती आदि स्थानों से प्राप्त पकी मिट्टी के सजे हुए टुकड़े इस कक्ष में प्रदर्शित हैं। इस समतल-भूमि में जहाँ नदियों का पानी बहता था मिट्टी काफ़ी नर्म होती थी एवं पहाड़ या चट्टान नज़र नहीं आते थे और जमी तो इस इलाके में पकी मिट्टी की कला का ज़्यादा प्रचलन हुआ। इसलिए मन्दिर या कीर्ति-स्तम्भ, जो कि विष्णुपुर के मन्दिर में देखते हैं, को शोभित करने के लिए पकी मिट्टी का व्यवहार होता था। इनमें भीटरगांव से प्राप्त गुप्तयुग के शेषशायी विष्णु की मूर्ति एक अनोखी वस्तु है। बंगाल में पकी मिट्टी की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कला अब भी प्रचलित है और पहाड़पुर एवं महास्थानगढ़ की पकी मिट्टी के सजे हुए टुकड़े इस कला के निदर्शन हैं।

दक्षिण-भारत की ब्रोंज-निर्मित मूर्तियों का संग्रह दो धानियों में प्रदर्शित हैं। उनमें उत्तरकालीन पल्लव-कला के विष्णु की एक मूर्ति है। पूर्वी-युगीय चोल-कला के सोमस्कन्द-श्रेणी की भी एक बड़ी सुन्दर मूर्ति संग्रहीत है (चि० ६ बी.)। नटेश की कई मूर्तियाँ हैं, एक में परम्परा के अनुसार दो गणों को शिवजी के ऊपर के किनारे पर दिखाया गया है जिससे महा-काल नृत्य के समय काल का ख्याल रखें। इस संग्रह में नाग-पट्टीनम् से प्राप्त कई बुद्ध-मूर्तियाँ हैं जिनपर कई शिला-लेख भी मिलते हैं और मद्रास संग्रहालय व अन्यान्य स्थानों की बुद्ध-मूर्तियों की भाँति महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इनसे पता चलता है कि नाग-पट्टीनम् में बौद्ध-धर्म का प्रसार हुआ था एवं बहुत शताब्दियों तक यहाँ बौद्ध-विहार की जमात थी।

एक दीवार-धानी में मध्य तथा उत्तर-कालीन तिब्बत व नेपाल की कुछ मूर्तियाँ रखी गयी हैं। अन्यान्य धानियों में बर्मा व मध्य-एशिया की प्राचीन वस्तुएँ भी संग्रहीत हैं। कई टेबुल-केसों (धानी) में भारत के विभिन्न स्थानों से प्राप्त पकी मिट्टी की बनी आकृतियाँ, माला, मुहर एवं 'प्लाक' जैसी प्राचीन वस्तुएँ भी प्रदर्शित हैं। इनके अलावा विभिन्न प्रकार की मुहरों का एक बड़ा संग्रह है एवं यह सचमुच संग्रहालय का एक बड़ा मूल्यवान संग्रह है।

इसके बाद ईसवी सदी से लेकर १६वीं सदी तक के संस्कृत व प्राकृत शिलालेख प्रदर्शित किये गये हैं। इनमें से ज़्यादातर शिला-फलक है जिनमें कुछ ताम्र-पटी में हैं जो मुहर लगाये हुए एक अंगूठी के साथ दो या तीन या और ज़्यादा संख्या में है। ये मुहरें बहुत ही महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इनपर इनका दान देने वालों का, जो शाही खानदान के थे, अधिकार-सम्बन्धी ठप्पा रहने के कारण इनका महत्व बढ़ गया है।

मिश्र, पारस, बेबीलोन व ग्रीस आदि देशों से प्राप्त विदेशी पुरावस्तुओं का भी एक संग्रह इस कक्ष में प्रदर्शित है। मिश्र की पुरावस्तुओं में ओसि-रिस, अपनी सन्तान होरस को गोद में लिये हुए ईसिस जैसे मिश्र के प्राचीन देवताओं की छोटी-छोटी मूर्तियों का एक सुन्दर संग्रह देखने योग्य है। ओसिरिस को पाताल या नरक के ममी किये हुए राजा या प्रभु के रूप में दिखाया गया है। बच्चे को गोद में लिय हुए उनकी बहन तथा शक्ति ईसिस की प्रतिकृति उत्तरकालीन मैडोना व उनके बच्चे की प्रतिकृति का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आदर्श बनी। इनके अलावा चित्र-लिखावट के साथ ममी के कपड़े, ममी के हार, समाधिस्थ व्यक्तियों की कई आकृतियाँ, पवित्र झींगुर या पवित्र खोदित हथौड़ा, मनुष्य के मुँहवाले अमसेट, सियार के मुँह वाले टौटमुट्फ, बाज के मुँह वाले क़भसेनुफ एवं बन्दर के मुँहवाले हाथी जैसे निम्न-जगत् के दैत्य के मस्तक के साथ खोदित ढकने के साथ सेतरवली के फूलदान इस प्रकोष्ठ की दर्शनीय वस्तुएँ हैं। मिश्र की ममी, जिसका शरीर कपड़े से लपटा हुआ है और लकड़ी का बना ढकना पास में रखा हुआ है, प्रकोष्ठ के मध्य भाग में एक धानी में रखी गई है और जो इस कमरे की एक आकर्षक वस्तु है। चूना पत्थर के बनी दाढ़ीवाले लड़ाके की व एक लड़के की प्रतिकृतियाँ में नीग्रो-विशेषताएँ नज़र आती हैं। बेबीलोन की पुरावस्तुओं में कुनीफॉर्म लिपि के अक्षरों से उत्कीर्ण कुछ ईंटें देखने लायक हैं। ग्रीस देश की पुरावस्तुओं के संग्रह में एथेन्स से प्राप्त कई फूलदान व मिट्टी के प्रदीप उल्लेखनीय हैं।

भारतीय संग्रहालय के सिक्के-घर में भारतीय सिक्कों का एक विराट् संग्रह है। यहाँ भारत के विभिन्न स्थानों के विभिन्न राजवंशों के विभिन्न कालों के सिक्कों का प्रतिनिधि संग्रह रखा हुआ है। छेदों के साथ साँचे के रूप में ठप्पे से बने हुए ईसा पूर्वकालीन सिक्कों से लेकर मुसलमानी समय तक युनानी-भारतीय, पारसी-भारतीय, कुशान, मथुरा-क्षत्रप एवं औधेय, औदम्बर, मालव आदि जाति-सम्बन्धी, पंचाल, क्षत्रप, सातबाहन के शासकों के तथा उत्तर भारत के गुप्त एवं मध्ययुगीन सिक्कों का अनमोल संग्रह यहाँ सुरक्षित है। मध्य-युगीय तथा आधुनिक काल के सिक्के भी इस संग्रह में रखे गये हैं। सबसे पहले युग से लेकर दिल्ली के बादशाहों के राजकाल तक के मुसलमानी सिक्कों का संग्रह बड़ा ही मूल्यवान है। भारत में प्राप्त युनानी, रोमीय, पारसिक तथा भारतीय उत्कीर्ण रत्नों के अनमोल संग्रह को, जो पीयर्स संग्रह कहलाता है, भारत सरकार के पुरातत्व विभाग के महाध्यक्ष नें भारतीय संग्रहालय को ऋण के रूप में दिया है एवं एशिरिया की बेलन के आकार की मुहरें एवं मेसोपोटेमिया से प्राप्त पारसिक-ससानीय रत्न ने इस प्रकोष्ठ की महत्ता और भी बढ़ा दी है। यहाँ मुग़ल बादशाह शाहजहाँ की पन्ने की अँगूठी व पात्र, जिन्हें १७३९ में दिल्ली से नादिरशाह लूट लिये गये थे, भी मौजूद हैं। ये सब रत्न भारत सरकार से ऋण के रूप में संग्रहीत हैं। सिक्के-घर की वस्तुएँ प्रदर्शित नहीं की गई हैं परन्तु बाकायदा इस सिक्के-घर में प्रवेश किया जा सकता है; पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष ख़ासकर यथार्थ छात्र व दर्शकों के लिये इस कक्ष को देखने का प्रबन्ध कर देते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग्रंथ सूची

ऐलन, जे. . . . . १. कैटालग ऑफ इंडियान कयेन्स इन दी बृटिश म्युज़ियम, कैटालग ऑफ कयेन्स ऑफ दी गुप्त डायनसटिस ऐंड ऑफ शशांक, किंग ऑफ गौड़ (लंदन १९१४) प. १-१३८ व १-१८४, चि. १-२४

२. कैटालग ऑफ इंडियान कयेन्स इन दी बृटिश म्युज़ियम, कैटालग ऑफ कयेन्स ऑफ एन्शेन्ट इंडिया (लंदन, १९३६) प. १-९८ व १-३१८

ऐंडरसन, जे. . . . . कैटालग ऐंड हैंडबुक ऑफ दी आरक्योलॉजिकल कॉलेक्शन इन दी इंडियान म्युज़ियम, २ जिल्द (कलकत्ता, १८८३) प. १-२९५ व १-५२१

ऐनुअल रिपोर्ट ऑफ दी आरक्योलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, १९०१-१९३८

बाशोफर, एल. . . . . आर्लि इंडियान स्कल्पचर (पैरिस, १९२९) २ जिल्द में। प. १-१३७, चि. १-६२ व चि. ६३-१६१

बैनर्जी, जे. एन. . . दी डेवलपमेंट ऑफ हिन्दू आईकनोग्राफी (कलकत्ता विश्वविद्यालय, १९४१) प. १-४५९, चि. १-१०

नर्जी, आर. डी. . . १. दी टेम्पल ऑफ शिव ऐट भुमरा, मेमयरस् ऑफ दी आर्क. स. ऑ. इंडिया, न. १६ (कलकत्ता, १९२४) प. १-१४, चि. १-१७

२. आर्क्योलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया—इस्टर्न इंडियान स्कूल ऑफ मीडीवल स्कल्पचर (दिल्ली, १९३३) प. १-२०३, चि. १-९६

३. हिस्ट्री ऑफ ओड़ीसा, २ जिल्द में (कलकत्ता,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१९३० व १९३१) प. १-५५१, चि. १-४६ व प. १-४८१, चि. १-९५

४. एज ऑफ दी इम्पीरियल गुप्तस, मनीन्द्रचन्द्र लेकचर १९२४ (बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, १९३३) प. १-२५०, चि. १-३९

भट्टाचार्य, बी. . . . . बुद्धिष्ट आइकनोग्राफी (ऑक्स. यु. प्रेस, १९२४) प. १-२२०, २४३ चि.

भट्टशाली, एन. के. . . आइकनोग्राफी ऑफ बुद्धिष्ट ऐंड ब्राह्मणिकल स्कल्पचरस इन दी ढाका म्युज़ियम (ढाका, (१९२९) प. १-२७४, चि. १-७९

ब्लोश, टी. . . . . सप्लिमेंटरी कैटालग ऑफ दी आर्क्योलॉजिकल कॉलेकशन ऑफ दी इंडियान म्युज़ियम (कलकत्ता, १९११) प. १-९६

ब्हुलर, जी. . . . . इंडियान पैलिओग्राफी ग्रनड्रिस डेर इंडि-आरिशचे फिलोलॉजी ऐंड अल्टरटुम्सकुंडे, १७ चि. के साथ (स्ट्रसवर, १८९६) सप्लिमेंट टु इंडियान एंटिक्वेरी (३३) फ़्लीट द्वारा अनूदित (बम्बई, १९०४) प. १-१०२

चन्द, आर. पी. . . १. दी विर्गानिस ऑफ आर्ट इन इस्टर्न इंडिया वीथ स्पेशल रेफरन्स टु दी स्कल्पचर्स इन दी इंडियान म्युज़ियम, कैलकाटा, मेमयरस ऑफ दी आर्क. स. ऑफ इंडिया, न. ३० (कलकत्ता, १९२७) प. १-५४, चि. १-७

२. एक्सप्लोरेशन इन ओड़ीसा, मेमयर्स ऑफ आर्क, स. ऑफ इंडिया, न० ४० (कलकत्ता, १९३०) प. १-२७, चि. १-९

चक्रवर्ती, एस. एन. . . १. डेवलपमेंट ऑफ बेंगली अलफाबेट, ज. ऑफ रयाल एशियाटिक सो. ऑफ बेंगल (कलकत्ता, १९३८) प. ३५१-३९१, १० चि.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२. ऐन आउटलाइन ऑफ स्टोन एज इन इंडिया, ज. र. ए. सो. ऑफ बेंगल, x (कलकत्ता, १०४४) प. ८१-९८.

कडरिंगटन, के. द. बी. .. एन्शेंट इंडिया--फ्रॉम दी अर्लियष्ट टाइम्स टु दी गुप्तस वीथ नोट्स ऑन दी आर्किटेकचर ऐंड स्कल्पचर ऑफ दी मीडिवल पीरियड (लन्दन १९२६) प. १-६५, चि. १-७६

कगिन ब्राउन, जे. .. कैटालग ऑफ प्रिहिस्टरिक ऐनटिक्युइटस इन दी इंडियान म्युज़ियम (सिमला, १९१७) प. १-१५५, चि. १-१०

कुमारस्वामी, ए. के. .. १. ए हिस्ट्री ऑफ इंडियान ऐंड इंडोनेशियन आर्ट (लन्दन, १९२७) प. १-२९५, चि. १-१२८
२. ला स्कुल्पतुर द बोधगया, आर्स. एशियातिका, XVIII (पैरिस, १९३५) प. १-७२, चि. १-६०
३. यक्षस., २ जिल्द में (स्मिथसोनियन इन्स्ट. वाशिंगटन, १९२८, १९३१) प. १-४३, पच. १-२३ व प. १-८४, चि. १-५०

कनिंगहाम, ए. .. .. १. स्तुप ऑफ मारहुत (लन्दन, १८७९) प. १-४३, चि. १-५७
२. आर्क्योलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया रिपोर्टस, चि. १- XVIII (सिमला-कलकत्ता, १८७१ -१८८५)

डेविड्स रिहस, टी. डब्ल्यू. .. बुद्धिस्ट इंडिया, स्टोरी ऑफ दी नेशन्स सिरीज़ (लन्दन, १९०३) प. १-३३२, ५७ चि.

द तर्रा, एइच ऐंड पैटरसन, टी. टी. .. स्टडिस इन दी आइस एज इन इंडिया ऐंड एसोसियटेड ह्युमन कलचर (वाशिंगटन, १९३९) प. १-३५४, चि. १-५६ व १९३ चि.

दीक्षित, के. एन. .. एक्सकैवेशन ऐट पहाड़पुर, मेमयर्स ऑफ दी आर्क.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स. ऑफ इंडिया, नं. ५५ (दिल्ली, १९३८), प. १-९९, चि. १-६८

डीमांड, एम. एस. .. ए हैंडबुक ऑफ महोमेडान डेकोरेटिव आर्टस (न्यूयर्क, १९३०), प. १-२८७

एपिग्राफिया ब्रिटानिका .. जि. १-१९ (रेंगून, १९१९-१९२१)

एपिग्राफिया इंडिका .. जि. १- VXX रेकॉर्ड ऑफ दी आर्क. स. ऑफ इंडिया (कलकत्ता, १८९२-१९४२)

एपिग्राफिया इंडो-मोसलेमिका (कलकत्ता, १९०७-१९४०)

एपिग्राफिया ज़ेलानिका .. जि. I-III, आर्क. स. ऑफ सीलोन (ऑक्सफोर्ड, १९०४-१९३२)

फुट, आर. बी. .. .. १. दी फुट कलेकशन ऑफ इंडियन प्रिहिस्टरिक ऐंड प्रोटोहिस्टरिक ऐंटिक्युइटिस, नोट्स ऑन देयर एजेस ऐंड डिस्ट्रीब्युशन (मद्रास, १९१६) प. १-२४६, चि. १-६४
२. कैटालग रैसन (मद्रास, १९१४) प. १-२६२

फुशे, ए. .. .. १. बिगिनिंगस ऑफ बुद्धिस्ट आर्ट ऐंड आदर ऐसेस, टामस द्वारा अनुदित (पेरिस, १९२७) प. १-३१६, चि. १-५०
२. लार ग्रेको-बुद्धिक दु गांधार, i—ii (पैरिस, १९०५ व १९१८) प. १-६२६, चि. १-३०० व १-४००, चि. ३०१-४७५

फ्रैंक, ए. एइच .. .. दी टिबेटन ऐलफाबेट, एपिग्राफिया ईंड. XI (कलकत्ता, १९१२), प. २६६-२७२, चि. १-७

फ्रेंच, जे. सी. .. .. दी आर्ट ऑफ दी पाल एम्पायर ऑफ बेंगल (ऑक्सफोर्ड, १९२८) प. १-२६, चि. १-३२

गोपीनाथ राव, टी. ए. .. सम चोला इन्सक्रिपशन्स वीथ ए चेप्टर ऑन दी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इवल्यूशन ऑफ दी तामिल ग्रंथ ऐलफाबेट, ट्रावन्कोर आर्क. सिरीज़ (मद्रास १९१०-१३), प. २०१-२५० व चित्र

जातक .. .. निर्देशक जिल्द के साथ छै जिल्द फॉसबोल द्वारा सम्पादित एवं ई० बी० कवेल व अन्यान्य द्वारा अनुदित (केम्ब्रिज, १८९५-१९१३)

क्रैमरिश, सेंट .. .. इंडियान स्कल्पचर, हेरिटेज ऑफ इंडिया सिरीज (ऑक्सफोर्ड, १९३३) प. १-२४०, चि. १-५०

कृष्णस्वामी, वी. डी. .. स्टोन एज इन इंडिया, एन्शेंट इंडिया, न. ३ (दिल्ली १९४७) प. ११-५७, चि. १३-१४ व ८ चित्र

लुडर्स, एइच .. .. ए लिस्ट ऑफ ब्राह्मी इन्सक्रिपशन्स फ्रॉम दी अर्लियेष्ट टाइम्स टु एबाउट ए. डी. ४००, एपि. इंड, X (कलकत्ता, १९१२) प. १-१२६

मजुमदार, एन. जी. .. १. गाइड टु दी स्कल्पचरस इन दी इंडियान म्युज़ियम, भा. १ अर्ली स्कूल्स (दिल्ली १९-३७) प. १-१०६, चि. १-११ एवं फ्रॉटिसपिस, भा० २ दी ग्रीसो-बुद्धिस्ट स्कूल ऑफ गांधार (दिल्ली १९३७) प. १-३७, चि. १-१४, फ्रॉटिसपिस व एक मानचित्र।

२. एक्सप्लोरेशन इन सिंध, मेमयर्स ऑफ दी आर्क. स. ऑफ इंड न० ४८ (दिल्ली, १९३४) प. १-१७२, चि. १-४६

मजुमदार, आर. सी. .. ला पैलिग्रोग्राफी द इन्सक्रिपशन्स टु चम्पा, बुल द लेकोल फ्रांसेज़ देक्सत्रेम-ओरियँ, XXXII हैनोय, १९३२) प. १२७-१३९ व १ चित्र

मार्शल, जे. .. .. १. मोहन-जो-दारो ऐंड दी इंडस सिविलाइ-ज़ेशन ३ जिल्द (लन्दन, १९३१) i–प. १-३६४, चि. १-१४, ii– प. ३६५-७१६, (iii) चि. १५-१६४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२. ए गाइड टु टैक्शिला (दिल्ली, १९३६) प. १-१५४, चि. १-२५ व एकमानचित्र ।
३. एक्सकेवेशन्स ऐट टैक्शिला मेमो आफ दी आर्क. सर्वे ऑफ इंड, न. ७ (कलकत्ता, १९२०), प. १-७५, चि. १-२९

मार्शल, पे व फुशे, ए .. .. दी मनुमेंटस ऑफ साँची, ३ जिल्द (भोपाल राज्य द्वारा प्रकाशित १९३९)—प. १-३९६, चि. १-७०, चि. ७१-१४१

ओझा, जी. एइच .. .. भारतीय प्राचीन लिपिमाला, दी पैलिओग्राफी ऑफ इंडिया, २ रा संस्करण (अजमेर, १९१८) प० १-१९९, चि० १-८४

पोप, ए. यू .. .. ऐन इंट्रोडाकशन टु पर्सियन आर्ट सिंस दी सेवेंथ सेंचुरी ए. डी. (लंदन, १९३०) प. १-२५६, चि. १-१०३

रैपसन, ई. जे. .. .. कयेन्सं ऑफ दी आंध्र डायनस्टीं, दी वेष्टर्ण क्षत्रपस, दी त्रैकुटक ऐंड दी बोधि डायनस्टीं (लंदन, १९०८) प. १-२६८, चि. १-२१

राईस, बी. एल. .. .. माईसर ऐंड कुर्ग फ्रॉम इंसक्रिपशनस (लंदन, १९०९) प. १-२३८, चि. १-१५

शिवराममूर्ति, सी. .. .. १. अमरावती स्कल्पचर्स इन दी मद्रास गवर्णमेंट म्युज़ियम, बुल. मद्रास गवर्णमेंट म्युज़ (मद्रास, १९४२) प. १-३७६, चि. १-६५ व पुस्तक-चित्र

२. इंडियान एपिग्राफी ऐंड साउथ इंडियान स्क्रीपटस, बु. म. ग. म्यु. (मद्रास, १९५२) प. १-२८०, चि. १-१२ व चित्र

३. जिओग्राफिकल ऐंड क्रोनोलॉजिकल फैक्टरस इन इंडियान आइकोनोग्राफी, एन्शंट इंडिया,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

न. ६ (दिल्ली, १९५२) प. २१-६३, चि. २-२८ व ४० चित्र

स्मिथ, वी. ए. .. .. १. हिस्ट्री ऑफ फाइन आर्ट इन इंडिया ऐंड सीलोन (ऑक्सफोर्ड, १९३०) प. १-२३६, चि. १-१६५ व १४ पुस्तक चित्र

२. केटालग ऑफ कयेन्स इन दी इंडियान म्यूज़ियम कैलकाटा इनक्लुडिंग दी केबिनेट ऑफ दी एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बेंगल, जि. १. (ऑक्सफोर्ड, १९०६) प. १-३४६, चि. १-३१

सुब्रमनिय अय्यर, के. बी .. दी पांड्य कंट्रि ऐंड दी इंसक्रिपशन्स, प्रोसिडिंगस ऐंड ट्रैनज़ैकशन्स ऑफ दी थर्ड ओरियंटल कॉनफरेन्स, १९२४

सुब्रमनियन, टी. एन. .. .. पांडय तामिल एल्‌थुगल (आर्लि तामिल स्क्रिप्टस) इन तामिल (मद्रास, १९३८) प. १-११२, चि. १-७ व आ.

बोगेल, जे. फ. .. .. १. ला स्कल्पतुर द मथुरा, आर्स एशियाटिका. XV (परिस, १९३०) प. १-१३१, चि. १-६०

२. दी अर्लियेष्ट संस्कृत इन्सक्रिपशन्स ऑफ जावा, पब्लिकेटिस वान डेन उढेकुनडिगेन डिन्सट इन नेदरलैंडस इंडिस, डील १ (१९२५) प. १५-३५.

—:०:—

क

ख

ग

घ

(क) रामपुरवा का सिंहवाला स्तम्भ-शीर्ष; मौर्य, ई० पू० ३री शती—प्रवेश कक्ष
(ख) पटने का यक्ष; मौर्य, ई० पू० ३री शती—प्रवेश कक्ष
(ग) बेसनगर की यक्षी; शुंग, ई० पू० २री शती—प्रवेश कक्ष
(घ) भारहुत तोरण की सिरिमा देवता; ई० पू० २री शती—भारहुत कक्ष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

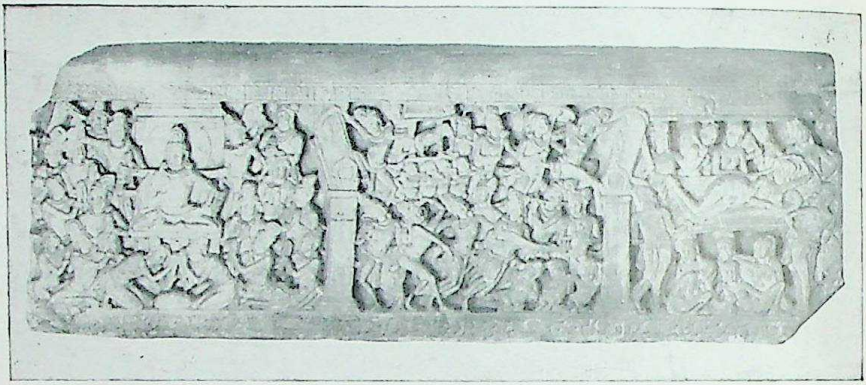

क

ख

(क) अमरावती के मुदेड़े से मायादेवी का स्वप्न; सातवाहन, २री शती--गुप्त कक्ष
(ख) भारहुत तोरण का द्वारपथ; शुंग, ई० पू० २री शती--भारहुत कक्ष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क

ख

ग

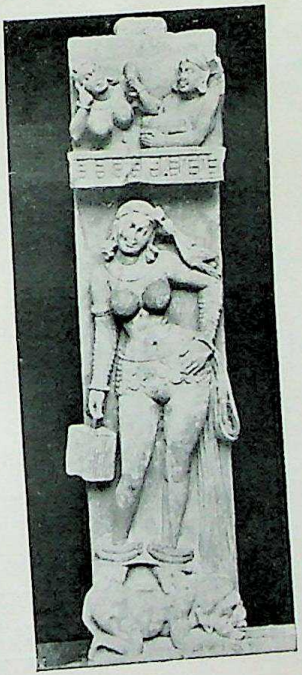

घ

(क) बोधिसत्व; गांधार, १ली शती—गांधार कक्ष
(ख) द्वारपाल; भुमरा, गुप्त, ५वीं सदी—गुप्त कक्ष
(ग) प्रभामंडल के साथ बुद्ध; मथुरा, गुप्त, ५वीं सदी— गुप्त कक्ष
(घ) तोते को लिये हुए यक्षी; मथुरा, कुशान, २री शती—गुप्त कक्ष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

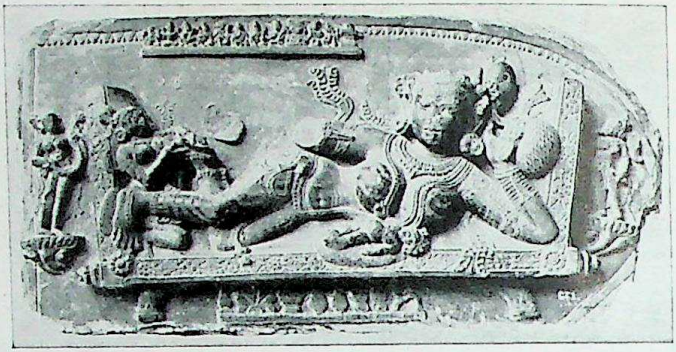

क

ख

ग

(क) माता व शिशु; बंगाल, मध्ययुग, ११वीं सदी—मध्ययुगीन कक्ष
(ख) रति व प्रीति के साथ मन्मथ; बिहार, मध्ययुग, १०वीं सदी—मध्ययुगीन कक्ष
(ग) हरगौरी; उत्तर-प्रदेश, मध्ययुग, १०वीं सदी— मध्ययुगीन कक्ष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क

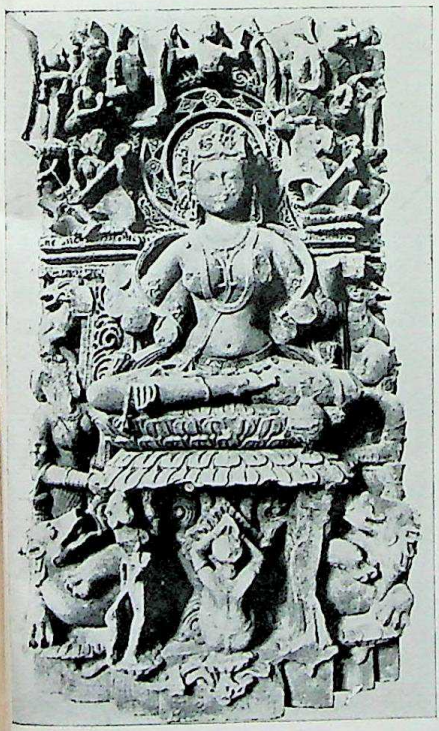

ख

ग

(क) नायिका का प्रेम-पत्र लिखना, जो कि उसके शरीर पर नख-क्षत से मालूम किया जा सकता है; भुवनेश्वर, उड़ीसा या विन्ध्य प्रदेश, मध्ययुग, १० से ११वीं सदी--मध्ययुगीन कक्ष

(ख) सर्वमंगला; सतना, रेवा स्टेट, मध्ययुग, ९वीं सदी--मध्ययुगीन कक्ष

(ग) नागिनी; खिचिंग, उड़ीसा, मध्ययुग, १०वीं सदी--मध्ययुगीन कक्ष

चित्र ६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation,.Chandigarh

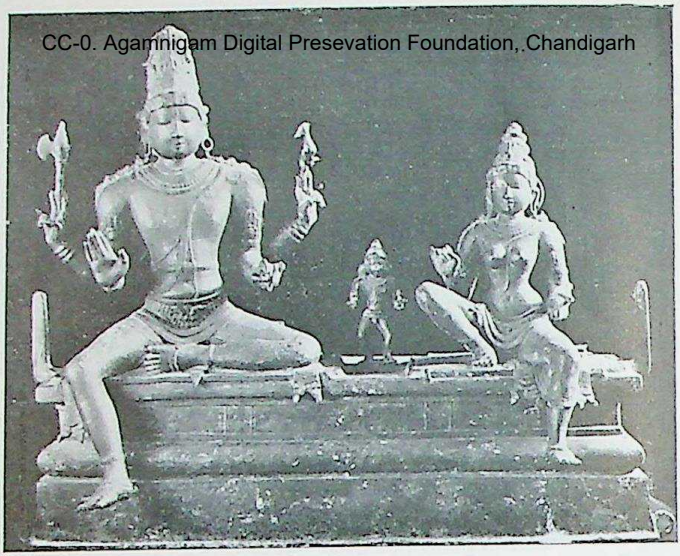

क

ख

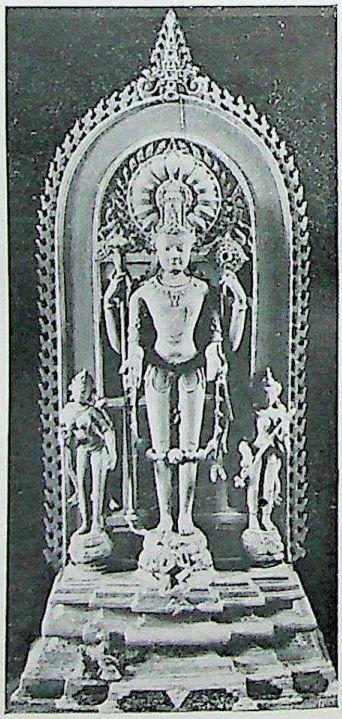

ग

(क) सोमस्कन्द; दक्षिण भारत, मध्ययुग, १०वीं सदी—प्रागैतिहासिक कक्ष
(ख) आलिंगन चन्द्रशेखर मूर्त्ति; दक्षिण भारत, मध्ययुग, १२वीं सदी—प्रागैतिहासिक कक्ष
(ग) शक्तियों के साथ विष्णु; रंगपुर, बंगाल, मध्ययुग, ११वीं सदी—मध्ययुगीन कक्ष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

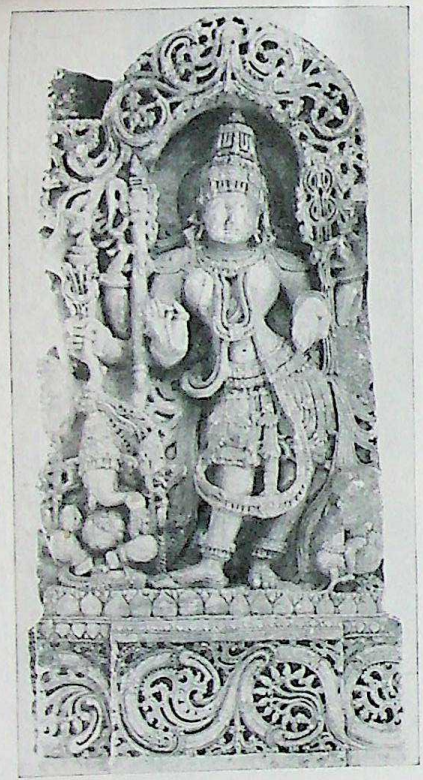

क

ख

ग

(क) सरस्वती; हेलविड, मैसूर, मध्ययुग, १२वीं सदी—मध्ययुगीन कक्ष

(ख) गणेश; जावा, मध्ययुग, ९वीं सदी—मध्ययुगीन कक्ष

(ग) गरुड़; कम्बोडिया, मध्ययुग, १०वीं सदी—मध्ययुगीन कक्ष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

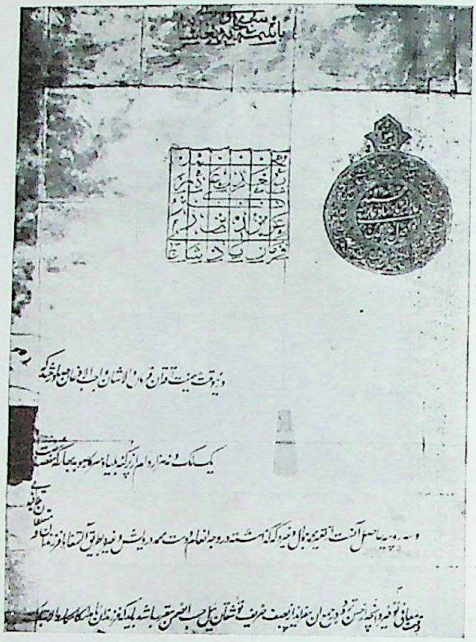

क

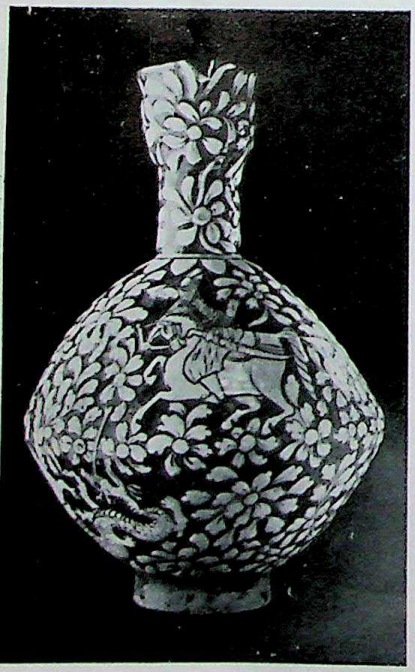

ख ग

(क) आलमगीर की मुहर के साथ फरमन; १८वीं सदी—मुसलमानी कक्ष
(ख) फ़ेएन्स का घड़ा; पारसी, १३वीं सदी—मुसलमानी कक्ष
(ग) उमर ख़ैय्याम के भव्य के साथ खपड़ा; मुलतान, १७वीं सदी—मुसलमानी कक्ष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क

ख

ग

घ

ङ

च

छ

(क, ङ) मोहन-जो-दारो से पकी मिट्टी की मूर्ति; (ख, ग) मोहन-जो-दारो की मुहरें (घ) हड़प्पा की मुहर; (च) कोशाम की पकी मिट्टी की मूर्ति; (छ) नन्दनगढ़ की पक मिट्टी की मूर्तियाँ;—प्रागैतिहासिक कक्ष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र १०

ज

झ

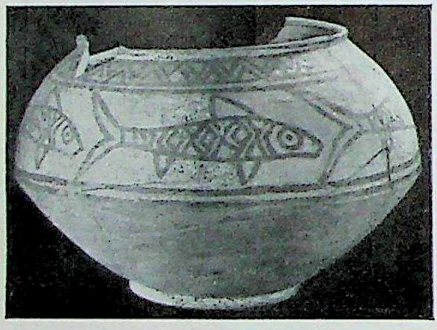

ञ

ट

ठ

(ज) हड़प्पा की पकी मिट्टी की मूर्ति; (झ) पिप्रावा का खोदित अवशिष्ट पात्र;
(ञ) नाल के चित्रित मिट्टी के बर्तन; (ट) मध्य-एशिया की पकी मिट्टी की मूर्ति;
(ठ) भीटा से पकी मिट्टी की मूर्ति—प्रागैतिहासिक कक्ष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

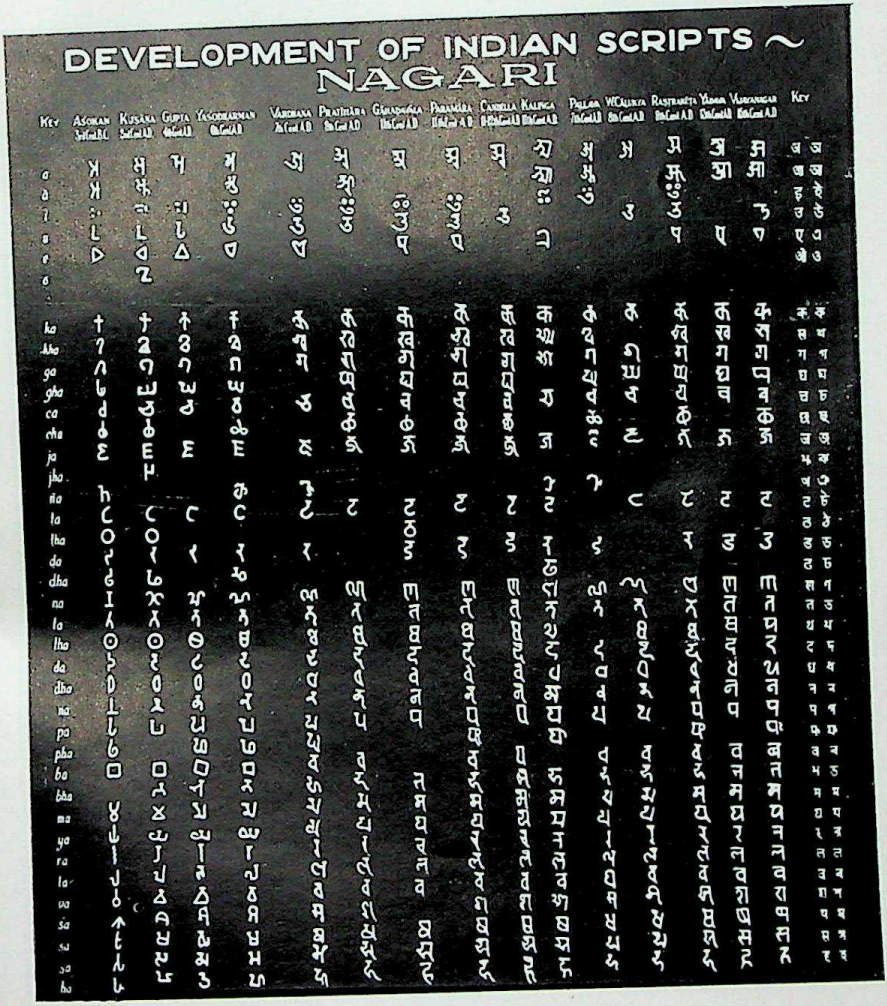

नागरी-लिपि का विकास-क्रम दिखाती हुई चार्ट—ऊपरी बरामदा

चित्र १२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

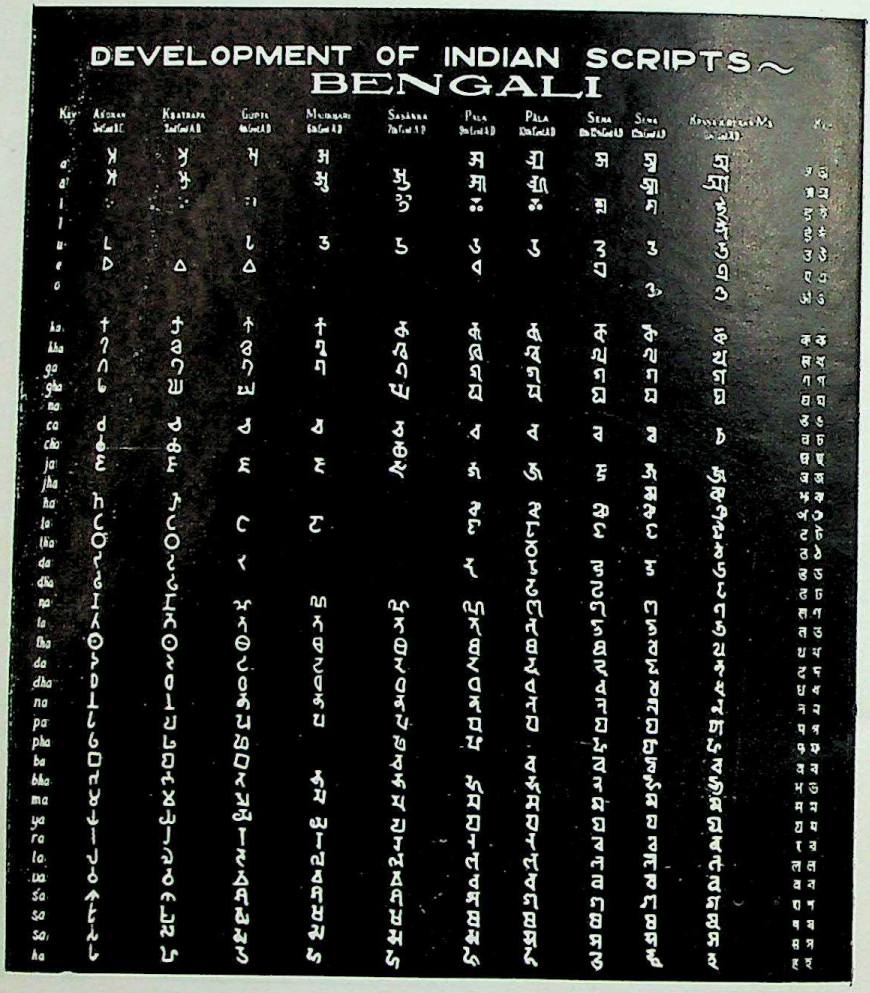

बंगला-लिपि का विकास-क्रम दिखाती हुई चार्ट--ऊपरी बरामदा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

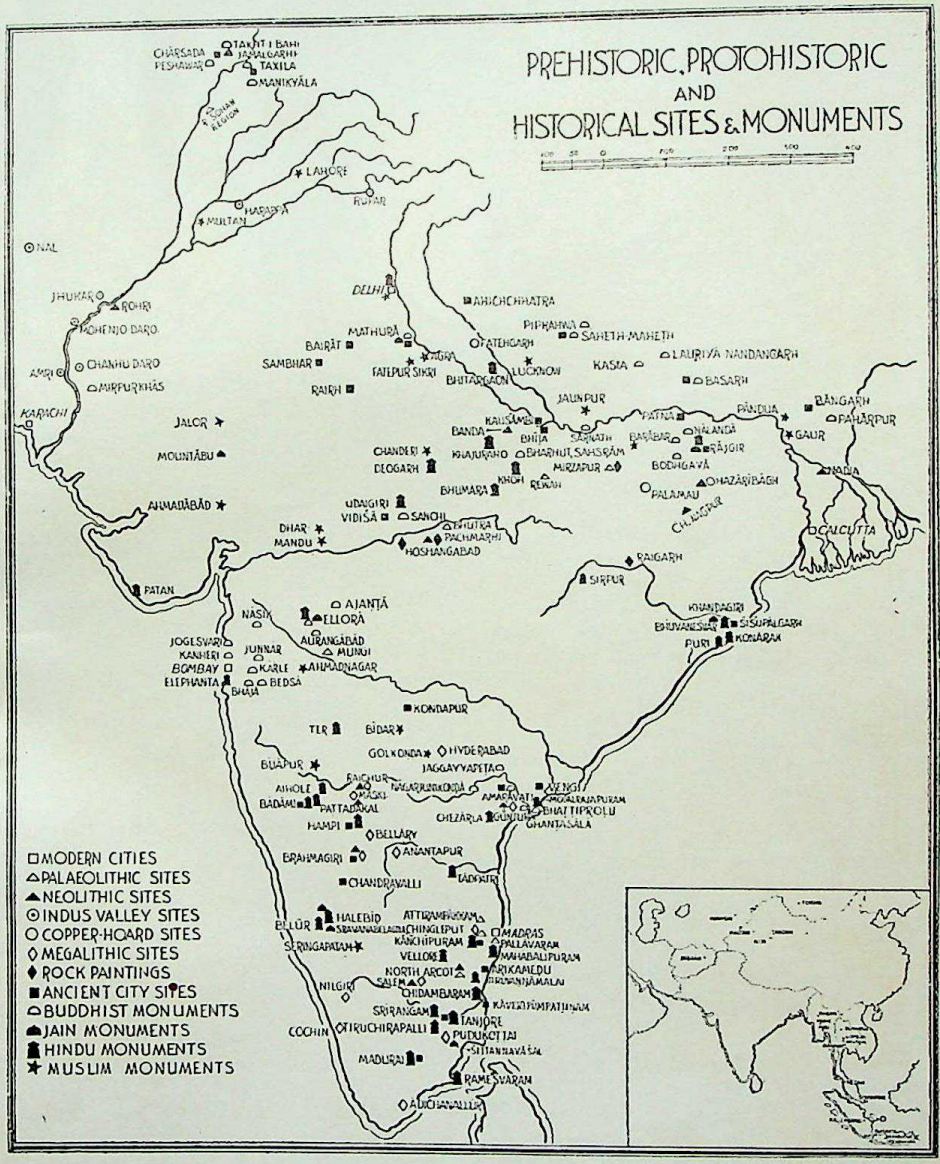

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh